तेरी छत्रच्छाया

रचयिता
आचार्य विभव सागर जी महाराज

संकलन
आर्यिका रत्न अर्ह श्री माताजी

मुनि विभवसागर जी आचार्य पद संस्कार औरंगाबाद

मंगलाचरण

तेरी छत्रच्छाया भगवन्!
मेरे शिर पर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

हे संयम प्राणप्रदाता!
रत्नत्रय दाता!
श्री गुरु विराग
मैं आपके
चरणों में
प्रार्थनारत हूँ।
आपकी प्रसन्नता
आपका शुभाशीर्वाद
आपकी करुणा दृष्टि
आपकी छाया
मेरे शिर पर हो।
और
मेरे जीवन का परम लक्ष्य
मेरा समाधिमरण
आपके श्री-चरणों
में हो।
शुभाशीष दो - भावना सफल हो।

प्रस्तुत शास्त्र जी!
हमारी चौबीस वर्षीय
रत्नत्रय आराधना
एवं
काव्य साधना का
अमृत है।
यही मेरी प्रार्थना
यही मेरी भावना
यही मेरी अंतिम
सर्वोत्तम
आत्म कल्याणकारी
हिताभिलाषा
आपके प्रसाद से
सफल हो।

नमोस्तु - गुरुवर!

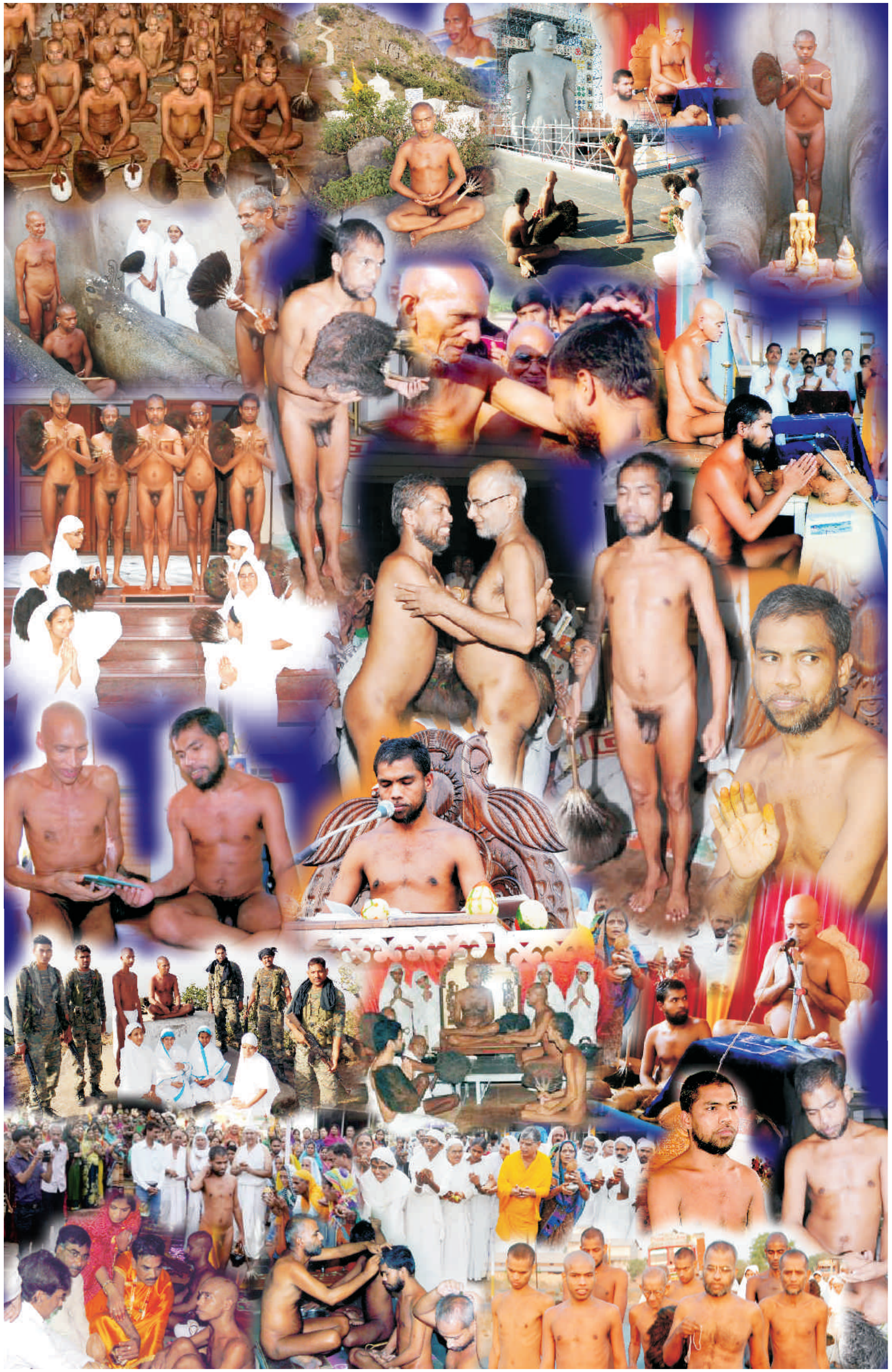

सचित्र सार्थ समाधि भक्ति पाण्डुलिपि

तेरी-छत्रच्छाया

रचयिता

शास्त्र कवि श्रमणाचार्य विभव सागर मुनि

संकलन

आर्यिका अर्हं श्री माता जी

चित्र

अरविन्द आचार्य, इन्दौर

आशीर्वाद : प. पू. गणाचार्य विराग सागर जी

मूल कृति : समाधि भक्ति

प्रस्तुत कृति : तेरी छत्रछाया..
(सचित्र सार्थ पाण्डुलिपि)
आचार्य श्री लिखित

रचयिता : सारस्वत कवि, विद्यावाचस्पति
डॉ. श्रमणाचार्य विभव सागर

संकलन कर्त्री : आर्यिका रत्न अर्हं श्री माताजी

चित्रकार : अरविन्द आचार्य इन्दौर (म.प्र.)

चित्र सौजन्य : आ. विभवसागर वर्षायोग समिति
निवाई (राज.)

प्रकाशक :- श्रमण श्रुत सेवा संस्थान, जयपुर

प्राप्ति :- सौरभ जैन जयपुर
:- प्रतिपाल टोंग्या इन्दौर
टी. के. वेद इन्दौर

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज

परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज का शुभाशीष...

ॐ

"तेरी छत्रछाया" समाधी भावना है
जो जन-जन तक पहुँची है, प्राय:
सभी साधु-साध्वियों, श्रावक श्राविकाओं
त्यागी-व्रती-अव्रती श्रद्धालुओं द्वारा भी
मुखरित हुई है, गायक हो या गीतकार
सभी ने गाया और पसंद किया उसे को
समाधिसाधक बड़ी रुचि से सुना तथा
अपने भावों को निर्मल कर भव को
सुधारा - श्रमणाचार्य श्री विभव सागर जी
प्रशंसित और प्रतिष्ठित हुए हैं मेरा
उन्हें तथा उनके इस पवित्र कार्य को
दिये शुभाशीष।

ॐ नमः
7/1/12/2545
कोलकाता - बेलगछिया उपवन

प्रस्तावना

सारस्वत कवि
डॉ. श्रमणाचार्य विभव सागर

प्रस्तुत कृति हमारी आत्म आराधना, श्रुताराधना, आत्म साधना की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। यह निरन्तर, नियमित ज्ञानोपयोग में अभिरुचि, तीर्थवंदना, गुरुजनों का पावन समागम, पूज्य पुरुषों के दुर्लभ दर्शन कर धर्मध्यान से प्रकट आत्मज्ञानमय अक्षय विशुद्धि का 'महाकाव्य' है।

इस कृति में आत्म विशुद्धि के पावन परिणामों की पवित्र परम्परा का आनन्दोत्पादक दर्शन और अनुभव होता है। सच में यह एक श्रेष्ठतम, दुर्लभ, सुरक्षित भाव सम्पदा का अक्षय भण्डार है।

सदोपयोगी, सर्वहितैषी यह रचना समाधि भक्ति है। यह हमारी सबसे प्रिय भक्ति, इष्ट प्रार्थना है। वीतरागता वर्द्धनी यह रचना अन्तरात्मा की समुज्ज्वल भावनाओं का साकार रूप है।

समग्र भारत देश में प्रायः समस्त जिन-मंदिरों, समग्र चतुर्विध संघों एवं समस्त पाठशालाओं, परिवारों में प्रतिदिन रुचि पूर्वक पढ़ी जाने वाली एक प्रार्थना यह समाधि भक्ति है। जो आगम निष्ठ, सर्वोत्तम, सरलतम, सर्वोपयोगी, आत्मकल्याणकारी, महत्त्वपूर्ण, पूजनीय जिनशासन की कालजयी अमर रचना है।

रचना उद्भव-

समाधि भक्ति इस अमर रचना का उद्भव मेरे हृदय में श्री दि. जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि पर आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की समाधि स्थली चरण छतरी के दर्शन कर परिक्रमा लगाते समय सन् 2005 में हुआ।

रचना काल-

5 जनवरी 2005 से 7 जून 2019 तक दो सौ काव्य पूर्ण हुए। 28 अक्टूबर 2019 को निवाई (राज.) में 14 काव्य रचकर दो सौ चौदह काव्य पूर्ण हुए। रचना क्रम समयानुसार जारी है।

रचना स्थल - भारतदेश के विविध विहार पथों में पुण्य तीर्थों के दर्शन करते हुए अनेक स्थलों पर इस पुण्य स्तुति की रचना हुई। जिनमें कुंथलगिरि (महाराष्ट्र) श्रवणबेलगोला, कुण्डलपुर, मांगीतुंगी, गजपंथा, आहारजी, पपौरा जी एवं समग्र वाचना, वर्षायोग स्थल।

रचना आधार- भगवती आराधना, दशभक्ति, समयसार, इष्टोपदेश, रत्नकरण्डक श्रावकाचार आदि जैन ऋषि प्रणीत आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थ, आराधना ग्रन्थ।

प्रस्तुत कृति के चित्र अरविन्द, आचार्य इन्दौर ने तैयार किए। जिनका संकलन समीचीन रूप सम्पादन आर्यिका रत्न अर्हंश्री माता जी ने किया।

शुभाशीर्वाद....

÷ शुभाशीर्वाद ÷

सचित्र सार्थ समाधि भक्ति
पाण्डुलिपि का प्रकाशन हमारी मानस
पुत्री! संस्कार सुता! आर्यिका रत्न
" अर्हम् श्री माता जी "
के सत्प्रेरणा से श्रमण श्रुत सेवा संस्थान
जयपुर के तत्त्वावधान में आचार्य विभव
सागर वर्षायोग समिति 2019, निवाई के
संयोजन में श्रुतप्रेमी श्रुतानुरागी! गुरुभक्त!
द्वारा जिनशासन उन्नति एवं
स्व पर हित सिद्धि रूप समाधिमरण
लाभ के प्रयोजन से किया जा रहा।
समग्र परिवार के सदस्यों
एवं प्रिय पाठकों को

शुभाशीर्वाद॥

आचार्य विभव सागर मुनिराज
वर्षायोग 2019, निवाई
(राज.)

परम पूज्य श्रमणाचार्य विभवसागर जी महाराज
दीक्षा देते हुए

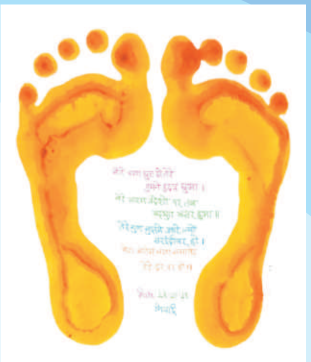

आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज
चरण चिन्ह

-|- समर्पण -|-

रत्नत्रय महोदधि!
हे दीक्षादाता!
मम उपकारी गुरुवर्य!
आपके श्री चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु--
हे भगवन्!
आपके 44वें अवतरण दिवस पर
आपकी सर्वप्रिय कृति समाधिभक्ति
आपके पवित्र कर कमलों में
सादर समर्पित।
हे श्रद्धा के देवता!
आपसे मैं क्या मांगूँ? मांगना उचित
नहीं लगता लेकिन फिर भी
मांग लेती हूँ।
हे महावीर लघुनंदन गुरुवर!
जब तक मुझे निर्वाण की प्राप्ति न हो
तब तक आपके चरण उत्कीर्ण किये
हुये के समान मेरे हृदय में और
मेरा हृदय आपके श्री चरणों में
सदा लीन रहे।
और
मेरी समाधि आपके पादमूल में
हो।

अर्हं श्री माता जी
निवाई 13-10-19

पुण्यार्जक गुरु भक्त परिवार

स्व. श्री बंशीधर जी बोहरा

स्व. श्रीमती नाथीदेवी बोहरा

श्रेष्ठी श्री विष्णुप्रसाद जी श्रीमती ममतादेवी

सुश्री रीमा बोहरा

श्रेष्ठी श्री राहुल बोहरा श्रीमती पूजा बोहरा

श्री गौरव जी श्रीमती नेहा जैन

मो. : विष्णु बोहरा-9214022116, राहुल बोहरा-9887269116

समाधि - भक्ति

जिनवाणी रसपान करूँ मैं,
जिनवर को ध्याऊँ।
आर्य जनों की संगति पाऊँ,
व्रत संयम चाहूँ॥
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ,
जिनवर यह वर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

समाधि भक्ति

परम श्रद्धेय
प्रिय जिनवर!

मैं अपने जीवन का अंत समाधिमरण पूर्वक आपके श्री चरणों में चाहता हूँ यह मेरी आत्मीय अभिलाषा पूर्ण करने के लिए आप मुझे पत्रांकित लाभ प्रदान करें :-

1. जिनवाणी रसपान
2. जिनवर ध्यान
3. साधु - संगति
4. व्रत धारण
5. संयम पालन
6. गुणीजनों के सम्यक् गुणों का गान

समाधि अभिलिप्सु
आचार्य विभव सागर

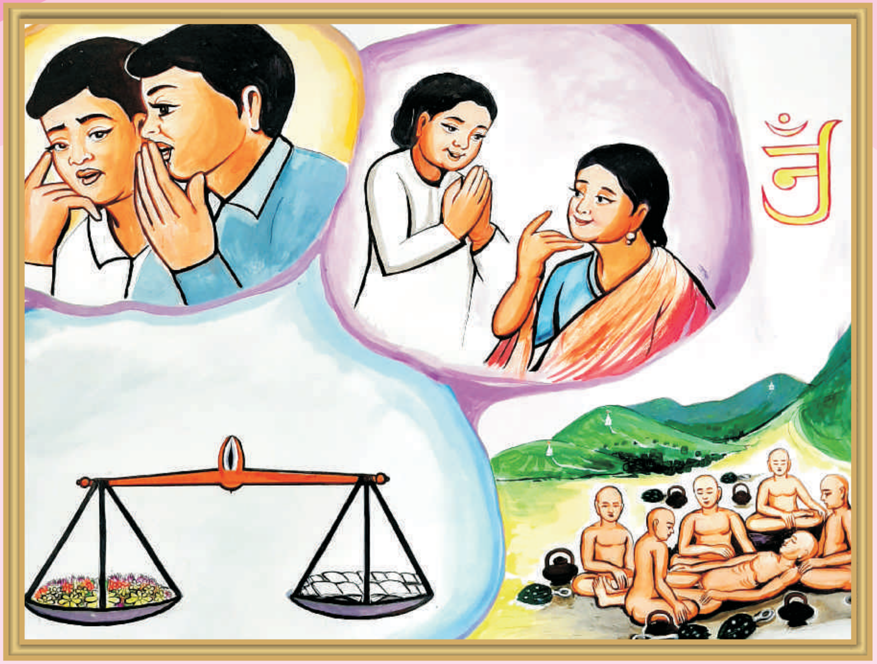

समाधि - भक्ति

परनिन्दा न मुँह से निकले,
मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू पर हितकारी,
सम्भाषण तोलूँ॥
आत्म तत्त्व की रहे भावना,
भाव विमल भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो

आचार्य विभव सागर

ओ मेरे भगवन् !

जन्म-मरण परम्परा छेदक भव भ्रमण नाशक जिनवर-प्रतिपादित समाधि मरण साधने की मेरी निजी अभिलाषा हैं। इस पवित्र लक्ष्य की सिद्धि हेतु आप मुझे प्रस्तुत लाभ प्रदान करें —

1. पर निन्दा त्याग
2. हितकारी मधुर प्रिय सम्भाषण
3. आत्म तत्त्व की भावना
4. निर्मल भाव

हिताभिलाषी
भव्यात्मा

तेरी छत्रच्छाया

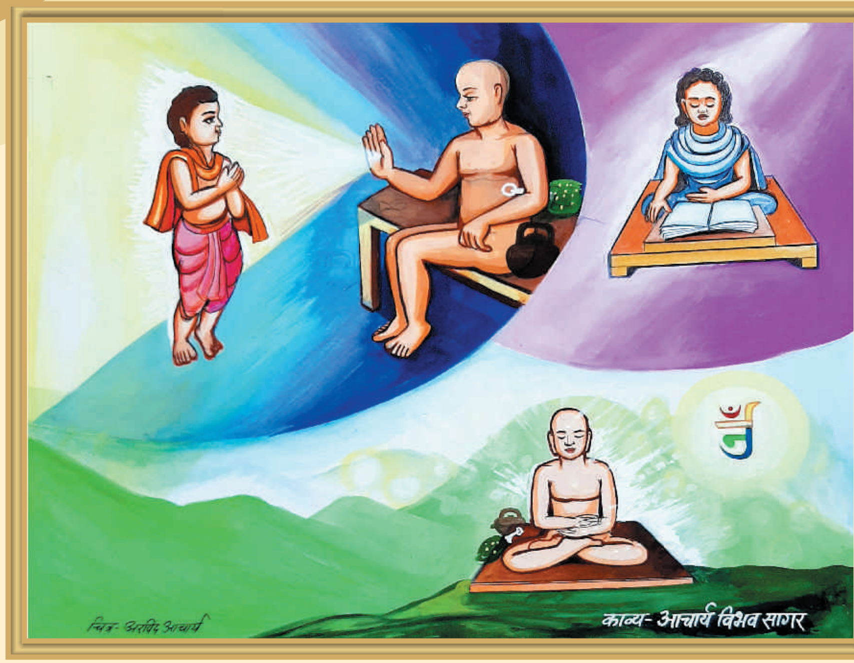

समाधि - भक्ति

बाल्यकाल से अब तक मैंने,
जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभु! आप तो,
बस इतना वर दो ॥
श्वास-श्वास अंतिम श्वासों में,
णमोकार भर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो

आ. विभव सागर

ॐ

हे मेरे इष्टदेव!

मैंने बालक अवस्था से
अबतक आपकी जो-जो भी सच्चे
मन से सेवा की हो तो सेवाफलदाता
यदि आप सेवा का कुछ भी फल देना
चाहते हो तो हे नाथ, मुझे बस इतना
फल दो कि मेरी श्वास-श्वास, में
अंतिम क्षण की अंतिम श्वासों में
णमोकार मन्त्र भरदो
तथा
मेरा अंतिम मरण समाधि
आपके आँगन में हो।

आ॰ विभव सागर

समाधि - भक्ति

विषय कषायों को मैं त्यागूँ,
तजूँ परिग्रह को।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ,
नाथ अनुग्रह हो।
तन पिंजर से मुझे निकालो,
सिद्धालय धर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो

आः विभव सागर

ओ मेरे भगवन्!

मेरा आपसे आत्मीय निवेदन है मैं आपके द्वार पर अपना समाधिमरण लक्ष्य सिद्ध करना चाहता हूँ। इष्ट लक्ष्य की सिद्धि हेतु इष्ट लाभ दो।

1. विषय कषायों का त्याग
2. परिग्रह त्याग
3. मोक्षमार्ग पर गमन
4. प्रभु अनुग्रह
5. काया से मुक्ति
6. सिद्धालय में रहना।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

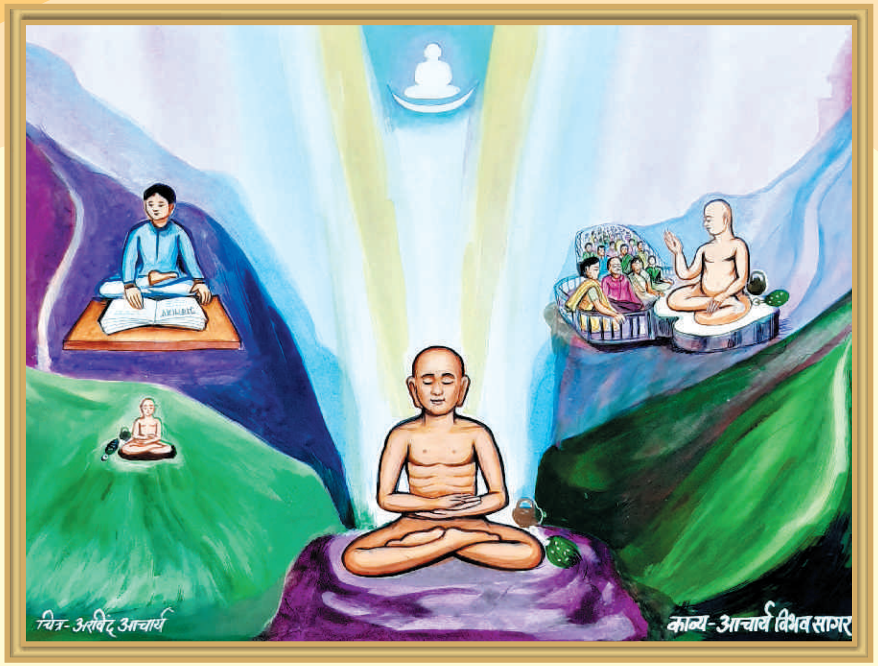

समाधि भक्ति

मैं पवित्र हूँ मैं प्रसन्न हूँ,
पूर्ण स्वस्थ हूँ मैं।
ज्ञानवान हूँ ध्यानवान हूँ,
आत्मस्थ हूँ मैं॥
आत्मक्रिया चिन्तन मन्थन में,
निज मन तत्पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे परमेष्ठिन् !

आपकी प्रसन्नता से
आपके कल्याणकारी प्रवचन प्रसाद से
आत्म हितकारी शुभाशीर्वाद - से -
आज
मैं पवित्र हूँ।
मैं प्रसन्न हूँ।
मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।
मैं ज्ञानवान हूँ।
मैं ध्यानवान हूँ।
मैं आत्मस्थ हूँ।
मुझे आप पुनः
शुभाशीष दें
मैं आत्मक्रिया
आत्म चिंतन में रमूँ।
आगम मन्थन में
मेरा मन सदैव
तत्पर हो

आचार्य विभव सागर
7.10.2019 निवाई

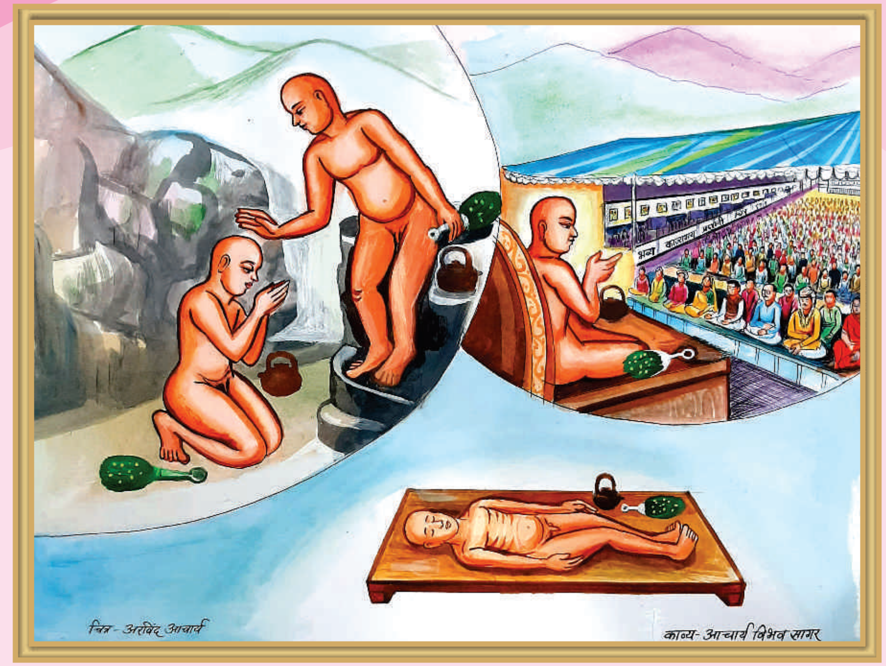

समाधि - भक्ति

गुरु से मुझको मिला है कितना,
क्यों इतना सोचूँ।
मैंने कितना किया समर्पण,
बस इतना सोचूँ॥
सेवा और समर्पण प्रतिपल,
बढ़ते क्रम पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

ओ मेरे भगवन्!

मेरी प्रार्थना पर
ध्यान दीजिए मैं चाहता हूँ
मेरा समाधिमरण आपके
श्री चरणों में हो इस हेतु-
हे वरदाता, वरदान दो:-

मैं हीन भावना न रखूँ
मैं ये न सोचूँ गुरु ने मुझे क्या दिया?
अपितु मैं सदा ये सोचूँ कि
मैं गुरु के लिए क्या समर्पण
कर पाया?
मेरा सेवा और समर्पण भाव
प्रति समय बढ़ते
क्रम पर हो।

तेरी छत्रच्छाया

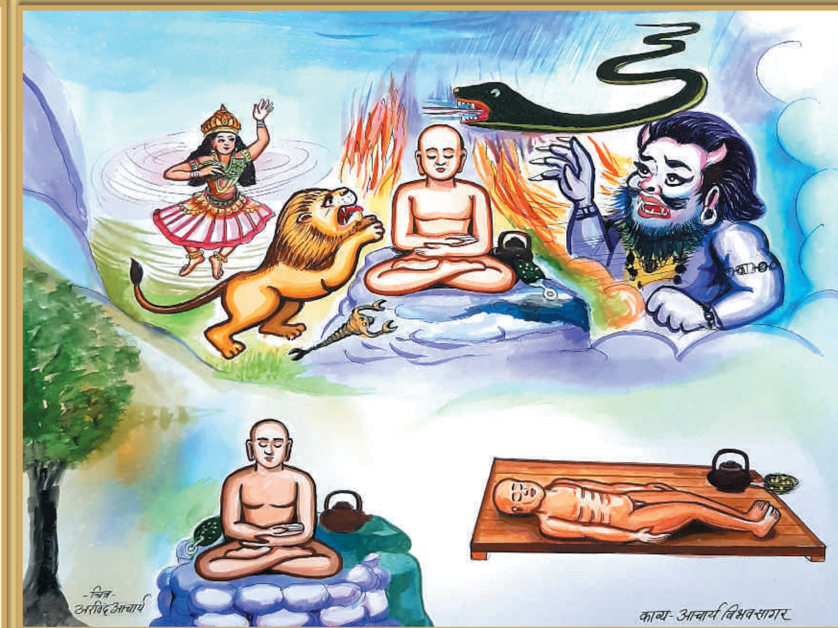

समाधि भक्ति

संयम पथ निर्बाध बनाओ,
मेरे गुरुवर जी!
मोक्ष महल तक साथ निभाओ,
मेरे प्रभुवर जी॥
उपसर्गों में बाधाओं में,
कभी नहीं डर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ओ परमोपकारी
मेरे प्यारे गुरुवर!

मैं आपके श्री-चरणों में
अपना भव सुधारना चाहता हूँ
इस प्रयोजन की सिद्धि हेतु
कृपया आप मेरी सहायता करें:-

1. मेरा संयम पथ बाधा रहित बनाओ।
2. मोक्ष महल तक आप मेरा
साथ निभाओ।
3. मुझे निर्भय बनाओ ताकि उपसर्गों-
बाधाओं में मुझे डर न हो।

आ. विभव सागर

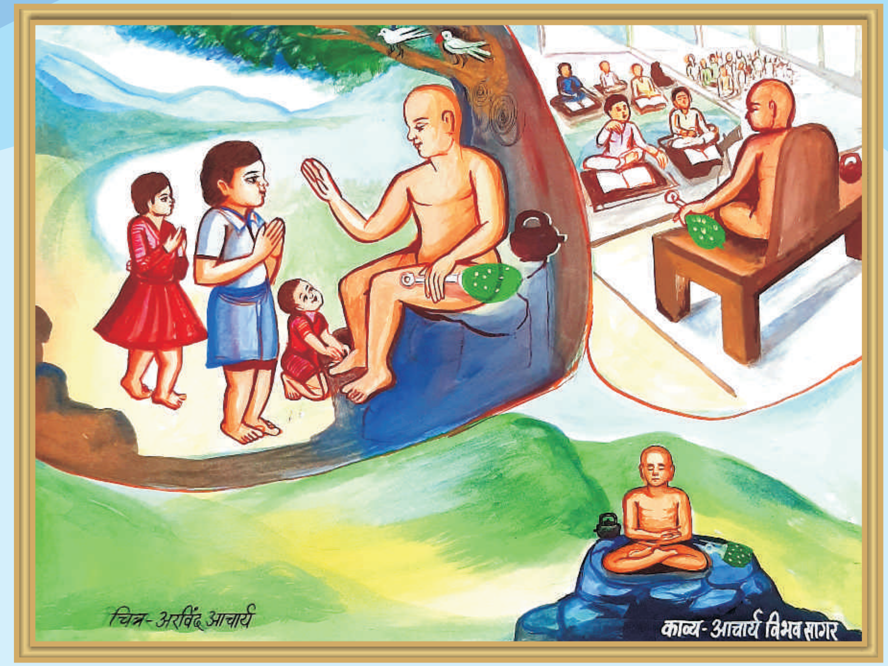

समाधि - भक्ति

चलते-फिरते प्राण हमारे,
श्री गुरुवर मेरे।
धर्मपिता की गोद में खेले,
हम बालक तेरे॥
धर्मपुत्र के पालन में तुम,
गुरु गोवर्द्धन हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे
संयम प्राण प्रदाता!
मेरे गुरुवर

आप मेरे प्राण आधार हो क्योंकि आपने मुझे संयम प्राण दिए। आप हमारे धर्मपिता हो मैं तुम्हारी गोद में खेलने वाला तुम्हारा संस्कार पुत्र हूँ। जिस प्रकार श्री गोवर्द्धनाचार्य जी बालक भद्रबाहु के पालन कर्ता थे उसी प्रकार आप मुझ बालक का पालन करने वाले हो
मेरा समाधिमरण
आपके श्रीचरण
में हो यह
आशीर्वाद दो।

आ॰ विभव सागर

समाधि-भक्ति

उद्‌गम थल से जैसे सरिता,
पतली सी बहती।
सागर तट लौं बहती जाती,
बढ़ती ही बढ़ती॥
इसी तरह मेरा आतम गुण,
बढ़ते क्रम पर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ॰ विभव सागर

हे रहस्य विद्यादाता
मेरे श्री गुरुवर!

आपने सिखाया-
नदी बनो। जैसे नदी
उद्गम स्थल से पतली धार
के रूप में बहना प्रारम्भ करती है
निरन्तर बहती जाती, बढ़ती जाती
वैसे ही मेरा आत्मा के रत्नत्रय
गुण मुझमें बढ़ते क्रम पर हो।

मेरा विकास
नदी की तरह
हो।
ताकि मैं इस भव से परभव तक
अपने गुण ले जाऊँ।

आ॰ विभव सागर

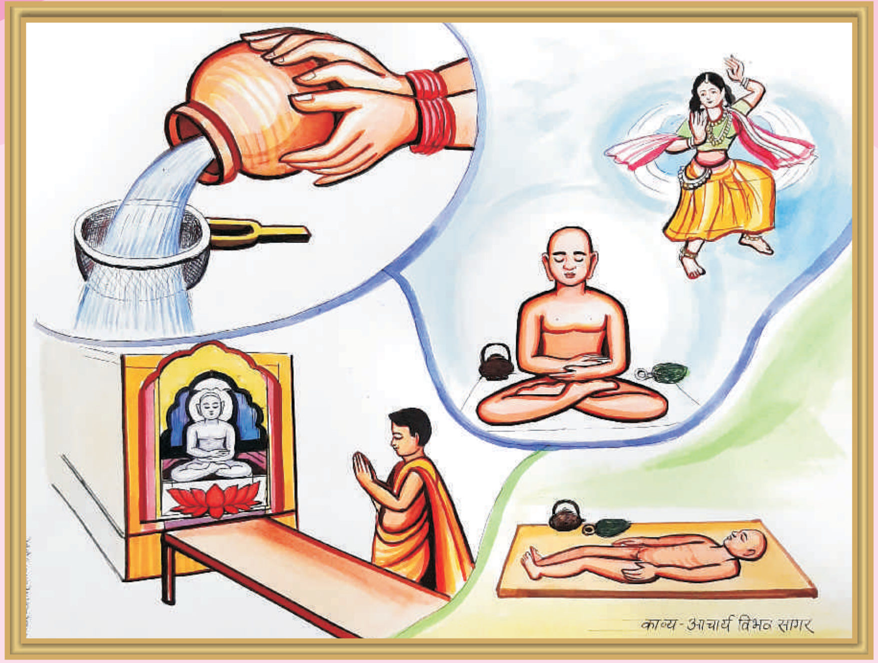

समाधि-भक्ति

ज्यों चलनी में नहीं ठहरता,
भरा हुआ पानी।
चंचल मन में नहीं ठहरता,
यम - संयम ज्ञानी॥
श्रद्धा युत दृढ़ संकल्पों से,
यह मन सुस्थिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ॰ विभव सागर

हे निष्कम्प योगी!
निष्काम साधक!
मम गुरुवर!

आपने मुझे सिखाया बेटा! जिस प्रकार चलनी में भरा हुआ पानी नहीं ठहरता उसी प्रकार चंचल चित्त वाले जीवों के नियम-यम-संयम स्थिर नहीं रहते। मैं समाधि का अभिलाषी अपने नियम-संयम को सदा स्थिर रखना चाहता हूँ अतः मन विजय की विधि बताइए?

बेटा!
सच्चे देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धा रखो। श्रुत का अभ्यास करो। प्रतिज्ञाओं को दृढ़ता से पालो। आपका मन सुस्थिर होगा।

आशिष दो ऐसा ही हो।

आ. विभवसागर

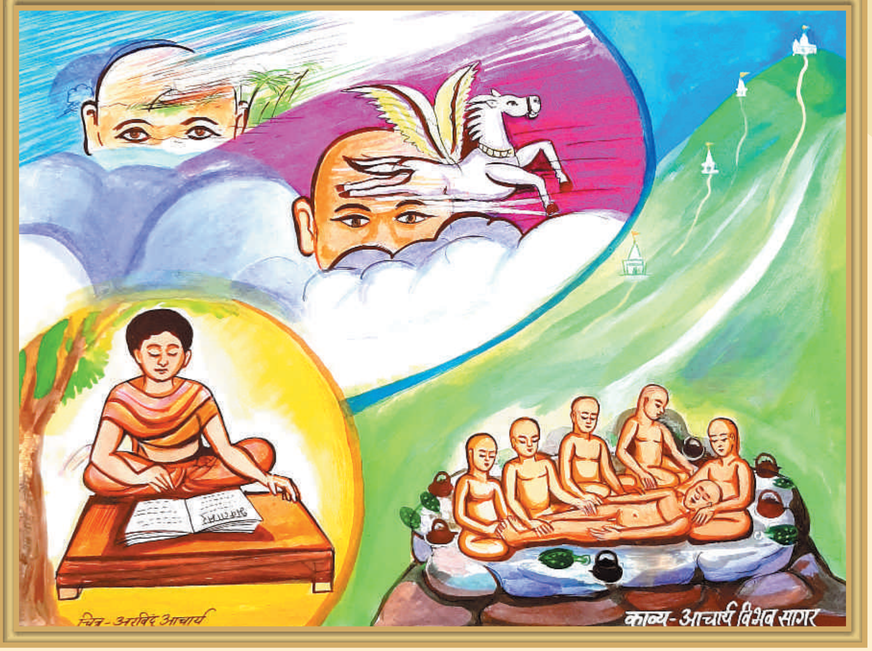

समाधि-भक्ति

चंचल मन है पवन वेग सा,
कौन दिशा जाये।
चंचल मन है दुष्ट अश्व सा,
कहाँ गिरा आये॥
चंचल मन के वशीकरण को,
नित भक्तामर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ओ मनो विजेता
मदन जेता
श्री गुरु !

आपने बताया
अपने मन पर विश्वास मत करो।
यह चंचल वायु के वेग जैसा कब
कौन दिशा जाये पता नहीं ? यह
चंचल मन उस दुष्ट घोड़े के समान
है जो घुड़सवार को ही कब, कहाँ
गिरा आये ? इसीलिए समाधान
दाता मुझे चंचल मन को वश में
करने का वशीकरण मंत्र दो ?

बेटा ! भक्तामर स्तोत्र
आराधना ग्रन्थ है। भगवती आराधना,
आत्मानुशासन, मूलाचार आदि
शास्त्रों के चिंतन- मनन में
मन को रमाये रखो अर्थात्
ज्ञान रूपी अंकुश रखो
मन नहीं भटकेगा।

आ. विभव सागर

समाधि- भक्ति

देख न पाया सुन ना पाया,
बोल नहीं पाया ।
तृष्णा सरिता में डूबा मन,
हित ना कर पाया ॥
मन संयम का महामंत्र गुरु,
कानों में भरदो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो ॥

आ. विभव सागर

हे मेरे परम हितकारी
श्री दयालु गुरु

मैं अब तक
आत्म कल्याण के मार्ग को देख नहीं पाया। आत्म हितकारी जिनवाणी को सुन नहीं पाया। स्वपर हितकारी आगमानुसारी वचनों को बोल भी नहीं पाया। लोभ-लालच की नदी में डूबा मेरा मन आत्म हित नहीं कर पाया।

अब हे दयालु देव!
मन संयम का महान मंत्र
आप मेरे कानों में
भर दीजिए।
जिनवाणी सुनाइए।
कृपा कीजिए

आ॰ विभव सागर

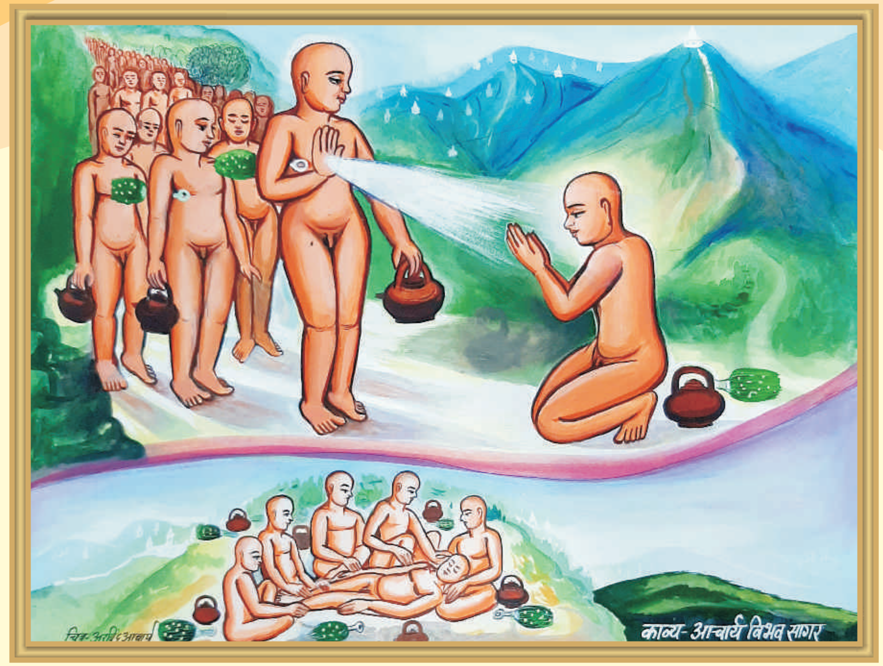

समाधि - भक्ति

सर्व संघ से हाथ जोड़कर,
क्षमा माँगता हूँ।
गुरु साक्षी में सर्व पाप को,
आज त्यागता हूँ॥
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे,
क्षमा भाव भर दो॥
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आचार्य विभव सागर

हे क्षमा धर्म देवता!
क्षमाधर्त्ता!
क्षमा कर्ता!
क्षमानिधान!
गुरुवर!

मैं शुद्धोपयोग रूप निर्विकल्प धर्मध्यान, निश्चय रत्नत्रय, निश्चय मोक्षमार्ग शुद्धात्म दशा रूप समाधि भाव को अपनी चैतन्य आत्मा में प्रकटाना चाहता हूँ। इस प्रयोजन के लिए आज मैं दोनों हाथ जोड़कर सर्व चतुर्विध संघ से क्षमा माँगता हूँ। तथा निर्ग्रन्थ गुरु की साक्षी मैं आज ही सभी पापों को मन, वचन, काय, कृत, कारित, अनुमोदन सभी प्रकार से संकल्प पूर्वक त्यागता हूँ।

क्षमामूर्ति! हे गुरुवर! हमारे हृदय में क्षमाभाव संचार करदो।

आ. विभव सागर

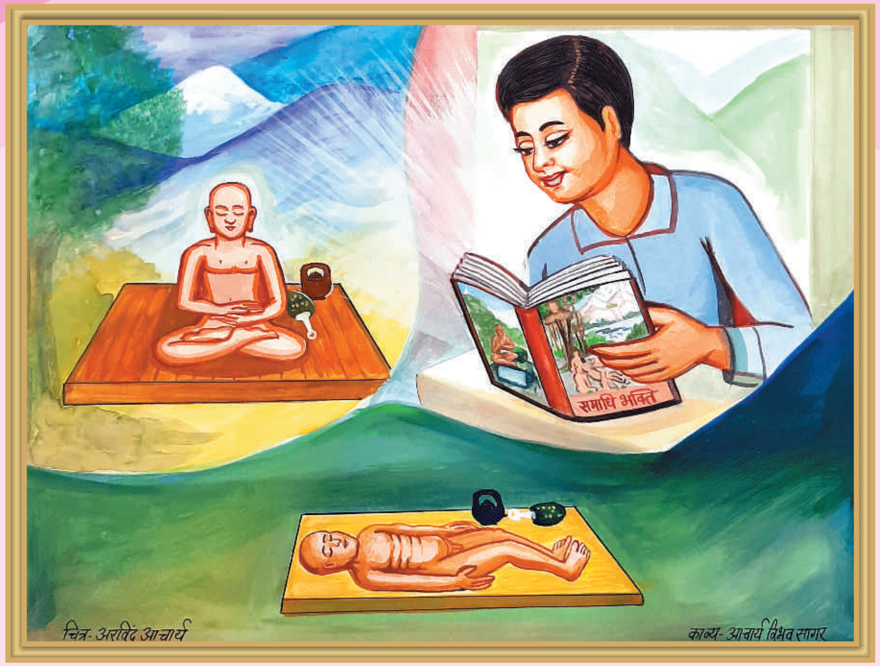

समाधि- भक्ति

जो समाधि में रुचि रखता है,
वह समाधि पावे।
दर्शन ज्ञान चरित्र की महिमा,
तन-मन से भावे॥
सल्लेखना का समाचार पा,
तन-मन हर्षित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आचार्य विभव सागर

हे समाधि सम्राट!
निर्यापकाचार्य!
श्री गुरुदेव

आपने यह भी सिखाया
कि जो साधु अथवा श्रावक सल्लेखना
कार्य में आत्मीय रुचि रखता है वह
समाधि लाभ पाता है। जो सम्यग्दर्शन
ज्ञान चारित्र की महिमा को स्व पर में
मण्डित करता, आचरण करता, कराता है।
वह भी समाधि पाता है।
हे पूज्यपाद गुरुवर आपने
यह भी बताया कि सल्लेखना क्रिया का
समाचार सुनकर हमारा तन-मन हर्षित
होना चाहिए।
जो आपने कहा
वह आत्मीय गुण मुझमें आप
प्रकट कीजिए।
'मेरा समाधि मरण
तेरे दर पर हो'

आ. विभव सागर

समाधि-भक्ति

कलिकाल यह पाप काल है,
हृदय कलुषता है।
सम्यक् श्रोता सम्यक् वक्ता,
की दुर्लभता है॥
प्रभावशाली जिन शासन की,
प्रभुता सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

जिन शासन प्रभावक
प्रभावनाचार्य
गुरुवर जी!

हे परम पूज्य गुरुव्रत धारी
श्री गुरुवर जी आपने अपनी अनुभव
की पाठशाला में मुझे यह भी सिखाया
था कि यह पंचमकाल पापकाल है।
इस में काल प्रभाव से जीवों के हृदय में
कलुषता (पापबुद्धि) उत्पन्न होती है।
इस काल में समीचीन धर्म के सुनने
वाले श्रोता एवं समीचीन जिनधर्म के
कहने वाले वक्ता ये दोनों ही अत्यन्त
दुर्लभ हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ-
कि त्रिभुवन प्रभावशाली आत्मकल्याण-
कारी जिनोपदेश की प्रभुता सर्वत्र
सुलभता से प्राप्त हो ताकि मेरा
समाधिमरण आपके
श्री-चरणों में हो।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

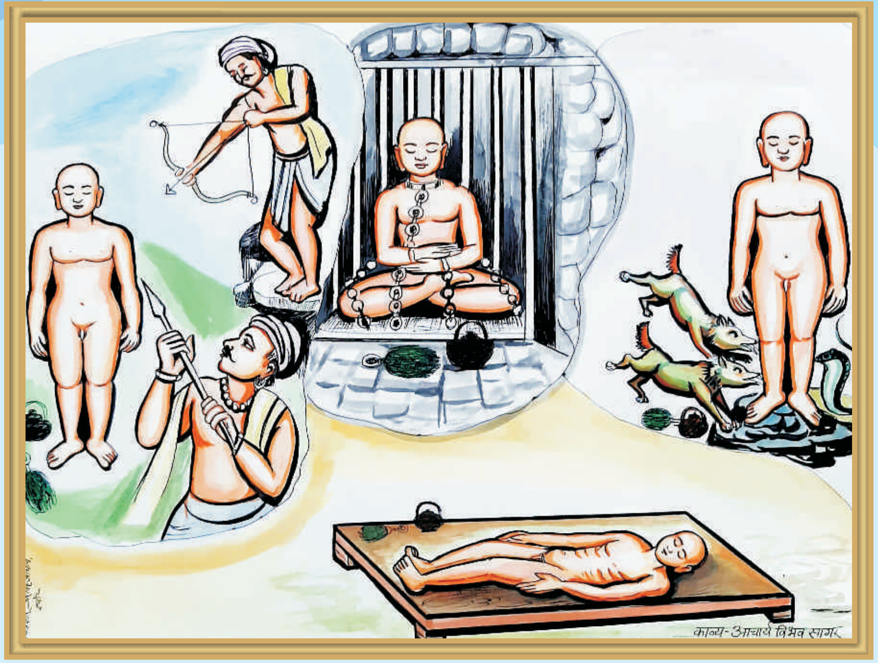

समाधि-भक्ति

छेदा जाऊँ, भेदा जाऊँ,
या बाँधा जाऊँ।
जहाँ-तहाँ ले जाया जाऊँ,
या खाया जाऊँ॥
तो भी नाश नहीं है,
दृढ़ श्रद्धा भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे भगवन्!
नमोस्तु!

मैं छेदा जाऊँ
भेदा जाऊँ
बाँधा जाऊँ
अथवा
जहाँ-तहाँ
ले जाया जाऊँ, खाया जाऊँ
तो भी मेरा नाश नहीं है।
यह मजबूत आस्था
दृढ़ विश्वास
मेरे मन में
आप भरदो
मेरा समाधिमरण
आपके दर हो।

प्रार्थी
आचार्य विभवसागर

समाधि-भक्ति

किसी के माथे सिगड़ी जलती,
सिंह प्राण खाये।
किसी-किसी को गरम-गरम
आभूषण पहराये॥
मैं अविनाशी अमर आत्मा,
शुभ चिंतन भरदो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर-पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

अहो जिनागम चिन्तक!
तत्त्वार्थ श्रद्धानी!
मेरे गुरुदेवजी!
मैंने आपके श्री मुख से सुना-
गजकुमार महामुनि के माथे पर सिगड़ी जली
सुकौशल मुनिराज को सिंही खाती रही
पंच पाण्डव मुनियों को गरम-गरम लोहे के
कड़े पहनाये।
इन सभी मुनियों ने उपसर्ग
के काल में "मैं अविनाशी अमर आत्मा हूँ"
यह विचार कर समता भाव पूर्वक उपसर्ग
सहा। कर्मक्षय कर आत्म कल्याण किया।

हे मेरे भगवन्!
ऐसा ही पवित्र चिन्तन
मेरे मन में भरदो।

मेरा समाधिमरण आपके चरणों में हो।

आचार्य विभव सागर
4.10.2019, निवाई

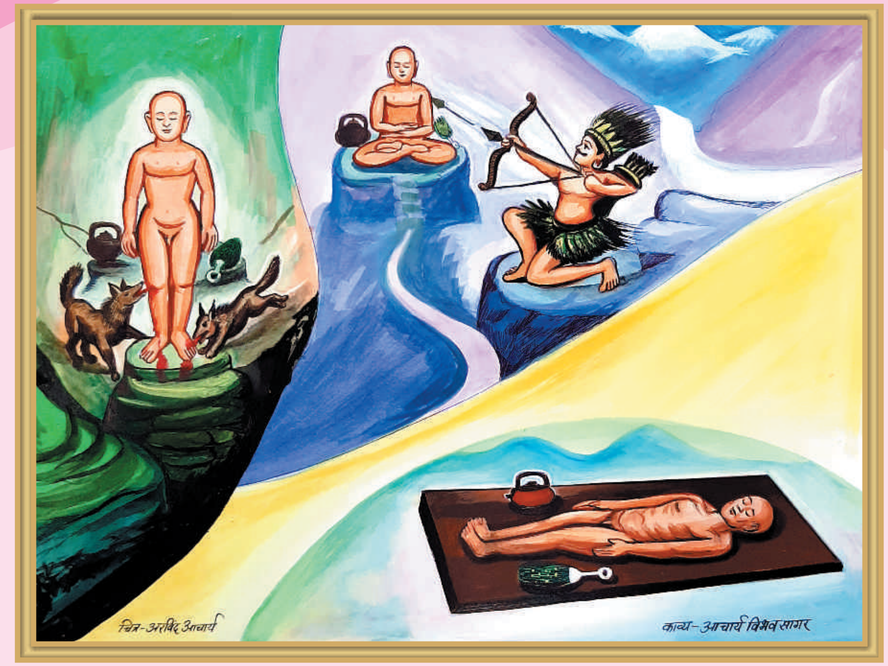

समाधि-भक्ति

सिद्ध अनंतानंत हुए हैं,
क्या-क्या सहकर के।
पीड़ाओं में पूजाओं में,
दृढ़ समता धरके॥
पीड़ा भी परमात्म बनाती,
सत्य कथन कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे उपसर्ग विजेता!
सकल परिषह जेता!
गुरुदेव जी!

आपने अपने सम्बोधन में
मुझे यह भी सम्बोधन दिया बेटा-
घबराओ मत, समता धरो। देखो
अनंतानंत मुनिगण जो कर्मनाश कर
सिद्ध हुए वे क्या-क्या कष्ट सहकर
के सिद्ध हुए उन्होंने भी अपनी मुनिदशा में
निंदा और प्रशंसाओं, पीड़ाओं और पूजाओं
में दृढ़ समता धारण की।
'हे पूज्यपादविरागगुरु!
मुझे दृढ़ता प्रदान करो में पीड़ा में समता
धारण कर समाधिमरण साधकर
आपजैसा परमात्मा बन सकूँ।
यह कथन सत्य
करदीजिए।

आचार्य विभवसागर

समाधि - भक्ति

खेतों में हरियाली होवे,
जन-जन खुशहाली।
रक्षाबन्धन पर्युषण हो,
घर-घर दीवाली॥
तीन लोक के सब जीवों में,
शान्ति-शान्ति भर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

जै

हे सर्व शान्तिकर
शान्तिनाथ जिन!
सादर नमन....

खेतों में हरियाली हो,
जन-जन में खुशिहाली हो,
घर-घर में रक्षाबन्धन हो
घर-घर में पर्युषण पर्व हो
घर-घर में दीपावली पर्व हो
तीन लोक के सब जीवों में
शान्ति - शान्ति भर दीजिए।
हे शान्ति जिन! मेरे भगवन्!
मेरी शान्ति प्रार्थना ध्यान से
सुन लीजिए। मेरा समाधिमरण
आपके श्री चरणों में
यह कृपया कर
दीजिए।

आचार्य विभव सागर

समाधि - भक्ति

चित्त शुद्धि से धर्मध्यान कर,
मन को शान्ति मिले।
वचन शुद्धि से भक्ति पाठ कर,
वाचा शान्ति मिले॥
णमोकार से काय शुद्धि कर,
निर्विकार कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे वीतराग जिन!
अनंत नमन
हे भगवन्!

मैं आपसे पावन प्रार्थना करता हूं।
मैं सदैव भाव शुद्धि पूर्वक ध्यान करूं।
ताकि मेरे मन को शान्ति मिले।

मैं वचन शुद्धि पूर्वक पूजा-पाठ
करूं जिससे मुझे वचन-शुद्धि, वचन
सिद्धि और वचनोत्पन्न शान्ति मिले।

मैं महामन्त्र से अपनी आत्मा को
निर्विकार रखूं ताकि मुझे कायिक
शान्ति मिले।

मेरा समाधिमरण आपके
समाधि लाभ दायक दर पर हो ◻

आचार्य विभव सागर
◻

समाधि - भक्ति

धन्य-धन्य हो जाये मेरा,
यह नर-भव पाना।
धन्य-धन्य हो जाये मेरा,
सन्त शरण आना॥
ओम् नमः सिद्धाय जपूं मैं,
जय सिद्धीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर
◻

ॐ

हे भगवन्!

मेरा यह नरभव पाना,
धन्य-धन्य हो जाये।
मेरा साधु शरण में आना,
धन्य-धन्य हो जाये।
ऐसा उपाय आप बताओ
मुझे वह दुर्लभ
रत्नत्रय दो
संयम दो
मैं
ओम् नमः
सिद्धाय नमः
जाप जपूँ
हे सिद्धिपति!
सिद्ध भगवान आपकी
जय हो।
मेरा समाधि मरण हो।

आ. विभवसागर

समाधि - भक्ति

गुण सुमरण से गुण धारण में,
रुचि पैदा होती।
गुण रुचि ही गुणवान बनाती,
दृढ़ श्रद्धा बोती॥
श्रद्धा बढ़ते वात्सल्य गुण,
हर इक घर में हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

नमोस्तु भगवन्!
प्रसन्न होइए
आशीष दीजिए

हे मेरे श्रुतगुरु! हे व्रतगुरु! आपने मुझे यह बड़े ही वात्सल्य भाव से सिखाया कि -

गुण स्मरण करने से गुणों में श्रद्धा पैदा होती है। गुणों के प्रति प्रकट हुई श्रद्धा ही दृढ़ श्रद्धा प्रकट करती है।

श्रद्धा बढ़ने पर वात्सल्य भाव बढ़ता है।

ऐसी श्रद्धा हर इक हृदय में हो
ऐसा वात्सल्य प्रत्येक घर में हो।
मेरा समाधि मरण तेरे दर पे हो।

आ. विभव सागर

समाधि - भक्ति

जल में थल में आये,
या नभ में आये।
कौन बताये किसका अंतिम,
समय कहाँ आये॥
जब भी आये, जहाँ भी आये,
शिर पर गुरुकर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे समाधि दाता!
समाधानकर्ता!
विरागदेवता
पद वंदना

हे भगवन्! पैंतालीस लाख योजन प्रमाण मनुष्यलोक ढाई द्वीप ही सिद्ध भूमि है। इसलिए मेरा कोई विकल्प नहीं कि मेरा समाधिमरण कहाँ हो? क्यों जल, थल, नभ सर्वत्र निर्वाणभूमि है।

मेरा एक विकल्प है -
मेरा मरण जब भी आये
जहाँ भी आये
मेरे शिर पर
गुरुवर!
आपका मंत्रपूत
कर कमल हो।
एवं आपके मंत्र
मेरे कान में गूँजें।

आ. विभव सागर

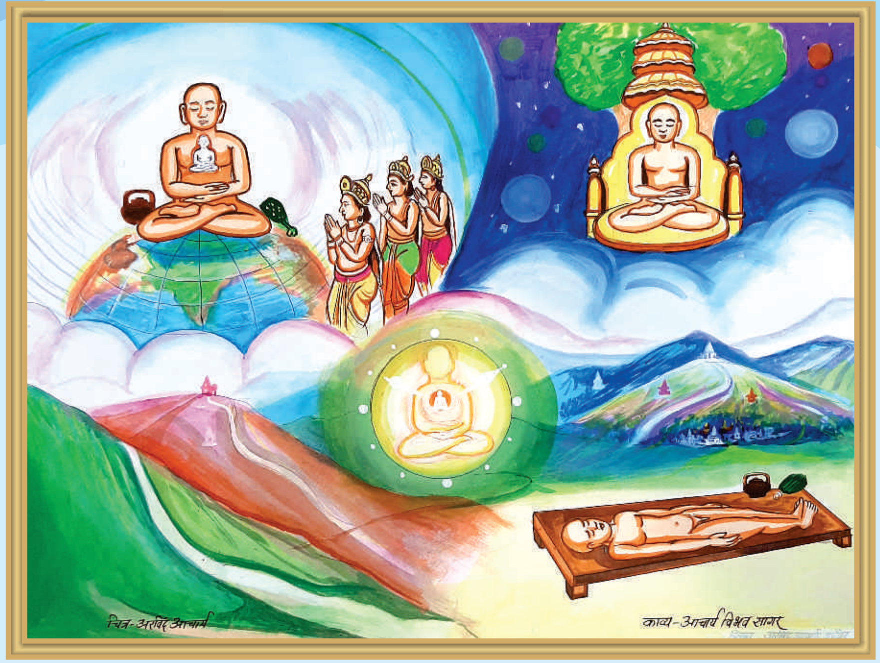

समाधि-भक्ति

निज स्वरूप में लीन हुआ है,
जिसका मन प्यारे।
उसके चरणों में नतमस्तक,
भुवनत्रय सारे॥
समय-समय पर समयसार का,
संवेदन भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे स्वरूप सम्बोधक!
श्री गुरुदेव जी!

निज आत्म स्वरूप
शुद्धात्म स्वरूप
अभेद रत्नत्रय
शुद्धोपयोग
आत्मानुभूति में जिसका
मन लीन हुआ वह धन्य है।

उसके श्री पूज्य-चरणों में
भुवन त्रय के सर्वश्रेष्ठ
सौ इन्द्र वृन्द
तथा
मुनीन्द्र भी
नर-नरेन्द्र भी मस्तक झुकाते हैं।
हे गुरु!
प्रत्येक आत्मा में
शुद्धात्मा का
स्वानुभव हो
समाधिमरण हो

आ. विभव सागर

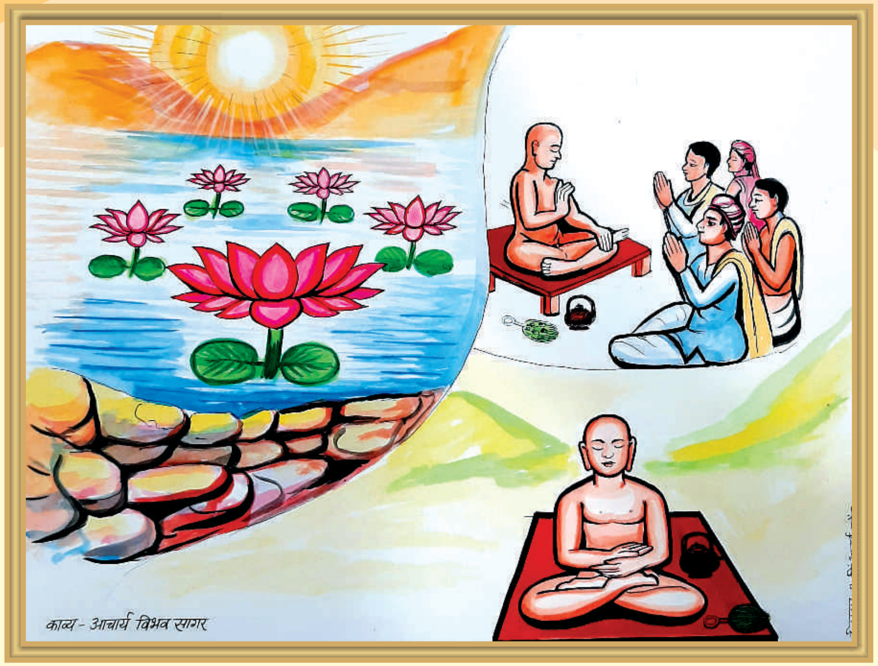

समाधि-भक्ति

ज्यों कमलों को करें प्रफुल्लित,
रवि किरणावलियाँ।
त्यों भव्यों को करें प्रफुल्लित,
गुरु वचनावलियाँ॥
प्रसन्नता औ प्रीति झरेगी,
प्रवचन गुरुवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हितोपदेशी श्री गुरु!
गुरुभक्ति
स्वीकार हो।

जैसे सूर्य की किरणें
कमलों को खिलाती हैं।
वैसे ही हे गुरुवर!
आपकी वचनावलियाँ
हम भव्य जीवों को
प्रफुल्लित करेंगी।
हे परम पूज्य करुणा निधान!
श्री गुरुवर जी!
मुझे प्रवचन दो
आपके प्रवचन में
प्रसन्नता
और
प्रीति
स्वरूप अमृत झरेगा।
मेरा समाधि मरण
आपके चरणों में
हो

आचार्य विभव सागर

समाधि- भक्ति

कोई फूल चढ़ाये चरणों,
पूजा पाठ रचे ।
कोई सर्प गले में डाले,
या अपशब्द कहे॥
उन दोनों में समताधारी,
सन्त मुनीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

तस्मै श्री मुनये नमः

उन मुनिराज के नमस्कार हो।
जिनके चरणों में कोई फूल चढ़ाये, पूजा
-पाठ, नमस्कार करे या कोई आकर गले में
सर्प डाले, अपशब्द कहे, निन्दा करे,
गीत सुनाये अथवा गाली
दोनों स्थितियों में
जो समभाव को
धारण करते है।
हे मुनीश्वर!
आपके समता भाव को स्मरण
कर मेरी आत्मा में समता
भाव जागे। मेरा समाधिमरण
आपके चरणों हो।

आचार्य विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

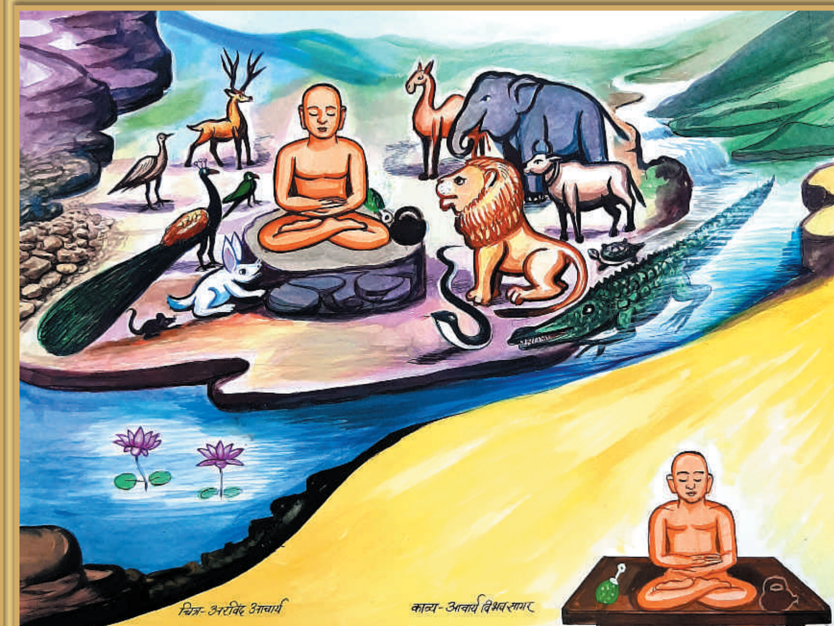

समाधि - भक्ति

सर्व जगत के जीव अनन्ता,
मेरे उपकारी।
यही भावना मित्र भावना,
हो मंगलकारी॥
रागद्वेष हैं दुख के कारण,
अतः इसे हरदो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

श्री सम्यग्ज्ञान प्रदाता
गुरुवर जी!

आपने मैत्री भावना को
आत्मकल्याणकारी तथा विश्वमंगलकारी
बताते हुए कहा था -

सृष्टि के अनंत जीव
मेरे अनंत उपकारी हैं।
महानुभव!
आपके ऊपर
किन - किनने!
कितने - कितने!
कब कब, कहाँ-कहाँ!
उपकार किए
कैसे कैसे
उपकार किए
यदि यह याद
आ जाये। ज्ञान हो
जाये तो मैत्री भाव
जन्म लेता है। उपकारी
के उपकारों को स्मरण करो
मैत्री भाव प्रकटेगा। राग-द्वेष
शमन होगा। हे प्रभु! मेरा समाधि
मरण आपके श्री चरणों में हो।

समाधि-भक्ति

मैंने मोक्षमहल पाने का,
लक्ष्य बनाया है।
माना मोक्षमहल की चाबी
गुरु पद छाया है॥
ज्ञान रूप जल, तप का भोजन,
मंगल पथचर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

आ. विभव

हे मुक्ति पथ नेता!
मोक्षमार्ग संयोजक!
आचार्य देवता!
"श्री विरागसागरजी"
नमोस्तु

मैंने आपको मोक्षमार्ग में चलते हुए देखकर मोक्षमार्ग पर चलने तथा मोक्षमहल पाने का पवित्रतम लक्ष्य बनाया है। मैंने मोक्ष महल की सीढ़ी श्री गुरु पद छाया रूप गुरु भक्ति परिणत सम्यग्दर्शन को माना है।

मैं आपके पद चिन्हों पर चल रहा।
ज्ञान रूप जल, तप रूप भोजन में पाथेय
पथ में आपका साथ मेरा पथ का
साथी हो।
मेरा समाधि मरण
आपके कुशल
तीर्थ्रित पदों में
हो।

आ. विभव सागर

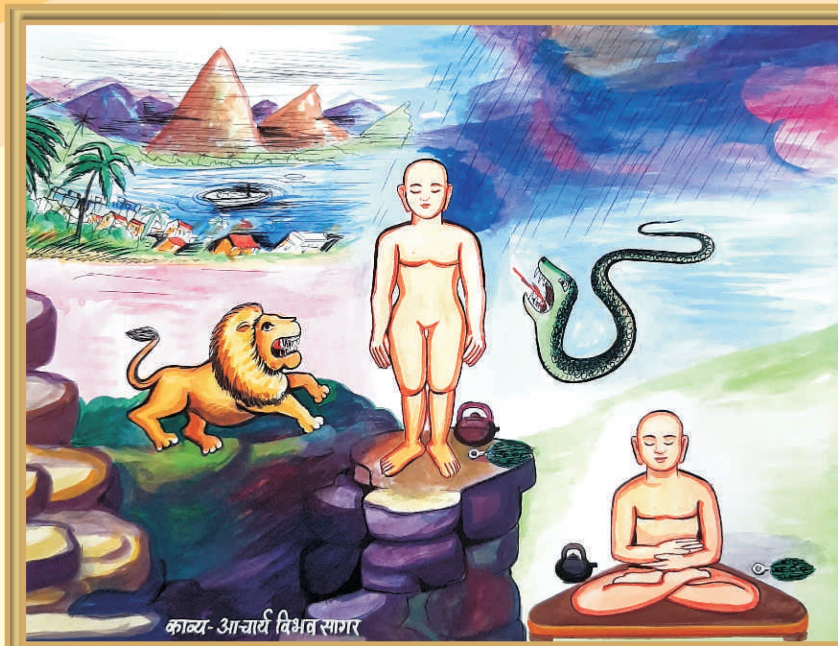

समाधि - भक्ति

अचल मेरु भी विचलित होवे,
धरा उलट जावे।
किन्तु इन्द्र भी मुनि के मन को,
नहीं पलट पावे॥
साम्य भाव का ऐसा वैभव,
जीवन में भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे समता मूर्ति!
गुरु विराग
पद वंदन

मेरा समाधि महोत्सव
आपके श्री पादमूल में हो।
मुझे शुभाशीर्वाद दो-

मेरा मन इतना दृढ़ बना दो
कि सुमेरु पर्वत चलायमान हो
किन्तु मेरा मन डग-मग न हो।
पृथ्वी पलट जाये किन्तु मेरा मन
न पलटे। यदि इन्द्र भी चाहे तो
मेरे मन को न पलट पाये।
साम्य भाव का
ऐसा वैभव
मेरे जीवन में
भर दो

आचार्य विभव सागर

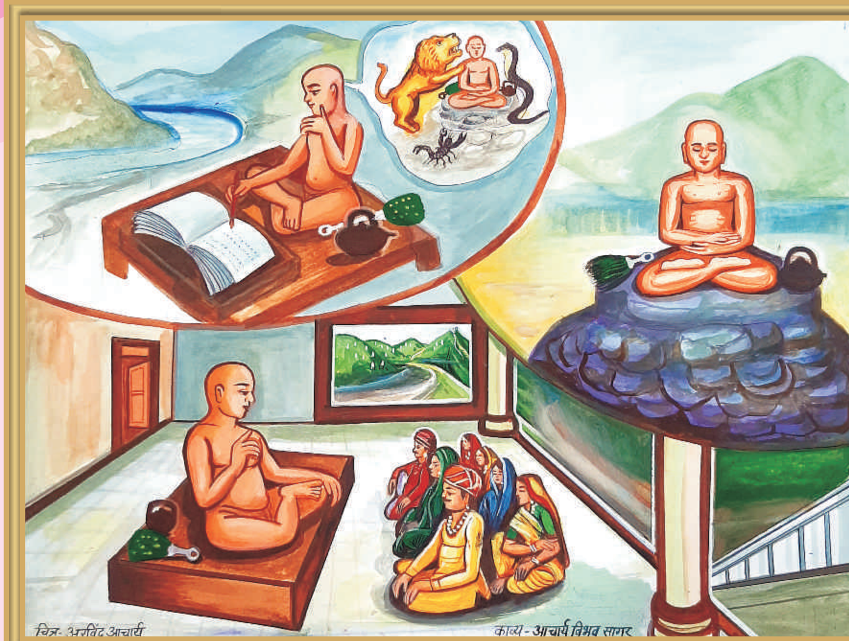

समाधि - भक्ति

किस विधि भव को पार करूँ मैं,
गुरु को तृप्ति मिले।
संघ परिश्रम सफल करूँ मैं,
सब का चित्त खिले।
दिग् - दिगन्त में श्रमण संघ की,
कीर्ति मनोहर हो॥
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

मोक्ष महल के शिल्पकार
श्री गुरुवर जी।

हे गुरुवर मुझे आप सिखाओ मैं किस प्रकार भव को पार करूँ जिससे मेरे गुरुदेव को संतुष्टि मिले। मेरे श्री गुरुवर जी आपकी प्रसन्नता का प्रसाद मुझे मिले।

मैं किस प्रकार साधना कर संघ परिश्रम सफल करूँ जिससे हमारे चतुर्विध संघ का चिरंतन काल तक चित्त कमल प्रमुदित हो।

हे गुरुवर मेरा समाधिमरण आपके संघ, आपके सान्निध्य में हो। मेरा प्रार्थना पूर्ण करो

आचार्य विभव सागर

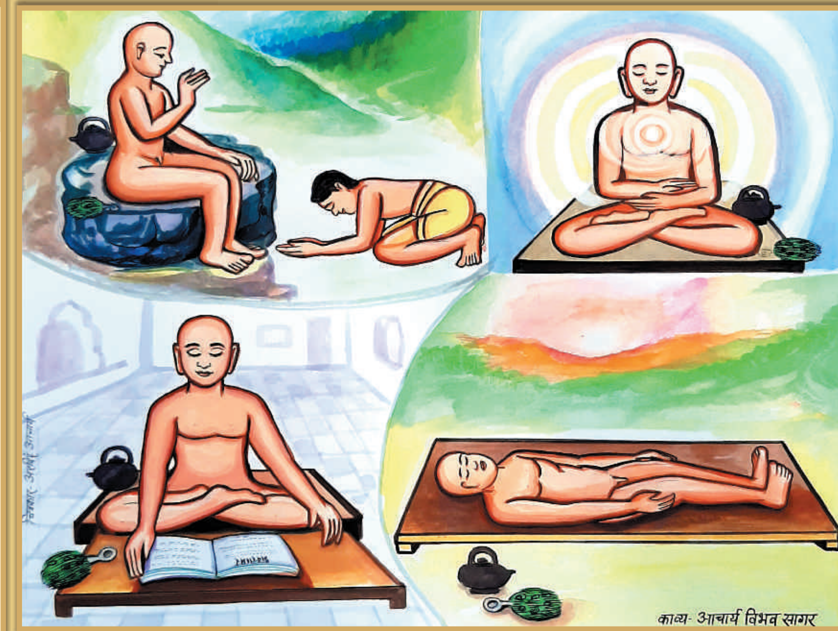

समाधि - भक्ति

शीश नवाकर गुरु आज्ञा को,
मैं स्वीकार करूँ।
जो-जो गुरुवर कहा आपने,
वैसा नित्य करूँ॥
स्वतः समाधि लाभ मिलेगा,
शिष्य विनयधर हो।
मेरा आन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

श्री गुरुवर जी!
सादर नमोस्तु...

आपकी दी हितकारी शिक्षायें
गुरुमंत्र हैं। आपने सिखाया -
"सहज, सरल, विनयवान
शिष्य श्रेष्ठ समाधि
साधता है"।

मैं
आपके चरणों में
समाधि साधना
सिद्ध करना चाहता हूँ।
मुझे शुभाशीर्वाद दो
मैं बिना प्रश्नचिन्ह किए
गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करूँ।
श्री गुरुवर!
आपने मेरे योग्य जो-जो
कर्तव्य पालन योग्य कहे
मैं निष्प्रमाद हो, नित्य ही
कर्तव्य पालन कर
समाधि का पात्र
बन सकूँ।

आचार्य विभव सागर

समाधि - भक्ति

अज्ञानी की बात - बात में,
हैं विकल्प कितने ?
अरे प्याज के छिलके भीतर,
छिलके हैं जितने।
पर भावों में नहीं उलझना,
सब छू मन्तर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे शिक्षाचार्य !
दीक्षाचार्य !
चरण स्पर्श

श्री गुरुवर जी आपने यह भी सिखाया "स्वभाव में रमना, स्वभाव में रहना साधना है। विकल्पों में उलझना विराधना है।

अज्ञानी की बात-बात में अनेक विकल्प वैसे ही आते जाते जैसे प्याज के छिलके भीतर छिलका।

हे शिष्य, परभाव नहीं करना।
परभावों में नहीं उलझना
सब विभाव
भाग जायेंगे
रमो तो
स्वभाव में।
श्री गुरुवर! ऐसी भक्ति, शक्ति दो
ताकि मैं स्वभाव में रम
आपके श्री चरणों में
समाधि लाभ लूँ।

आचार्य विभव सागर

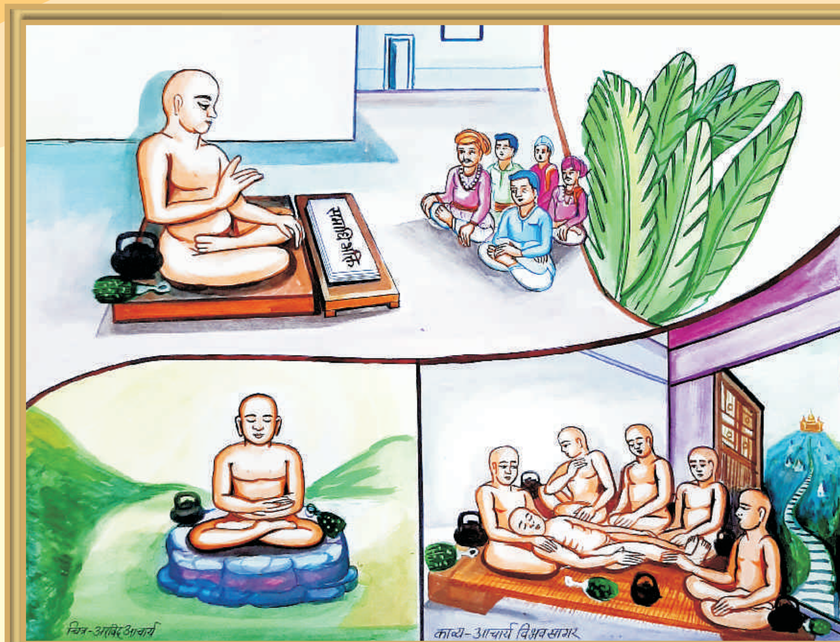

समाधि- भक्ति

ज्ञानी की हर बात-बात में,
तत्व भेद कितने ?
ज्यों केले के पात-पात में,
केल पत्र उतने ॥
ज्ञानी जन की संगति पाकर,
धर्मध्यान धर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो ॥

आ. विभव सागर

हे वाचनाचार्य!
चैतन्य समयसार!
नमोस्तु...

श्री गुरुवर! आज विशुद्धि के क्षणों में आपका स्मरण करते ही आपके द्वारा दी गयीं शिक्षाएँ मुझे याद आ रही हैं। आपने कहा था- "ज्ञानीजनों की संगति करना" जब कोई विद्वान आये तो मेरे पास आकर बैठो, देखो, सुनो, समझो -

ज्ञानी की प्रत्येक बात में कितने रहस्य होते हैं। जैसे केले के पत्र-पत्र में केल पत्र ही होते हैं, वैसे ही ज्ञानी की बातों में तत्त्वज्ञान समझो।

हे पूज्य गुरुवर!
आप शुभाशीर्वाद दो
मैं आप और आप सम
निश्चय रत्नत्रय परिणत
तीन गुप्ति धारी आत्म-
ज्ञानियों की शरण
और संगति में
रहूँ।
धर्म ध्यान धरूँ।

आचार्य विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

समाधि - भक्ति

धर्मामृत को पीने वाला,
कोई क्षपक अहो।
सर्व दुखों से रहे अछूता,
सुखमय सदा कहे॥
सुख अनंत को प्रतिपल भोगे,
सिद्ध जिनेश्वर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे निर्यापकाचार्य!
हे स्वरूप सम्बोधक!

हे भगवन्! आप कुशल
धर्मोपदेशक हैं। आपके श्री मुख से
धर्मामृत का रस पान करने वाला
क्षपक, सल्लेखना करने वाला साधक
उपसर्ग और परिषहों के मध्य में भी
समस्त दुःखों से अछूता ही रहता है।
अर्थात् उसे आपके प्रभाव से कोई भी
दुःख छू ही नहीं पाता। वह सदा
सुखमय ही रहता है।
तथा निराकुल भाव से
कर्म नाश कर
प्रतिपल अनंत सुख
भोगने वाला जिन,
सिद्ध परमात्मा
होता है।
मैं भावना भाता हूँ
मेरा समाधि मरण
आपके चरणों में हो।

आचार्य विभव सागर

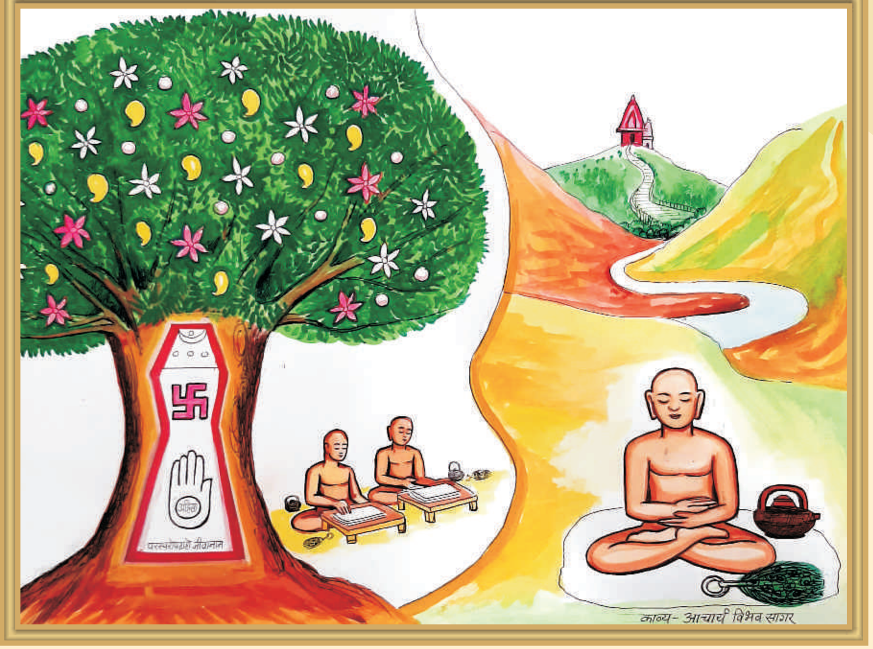

समाधि-भक्ति

जैनधर्म वह कल्पवृक्ष जो,
तीनों काल फले।
तप के पत्ते लगे हैं जिसमें,
सद्गुण फूल खिले॥
मोक्ष महाफल देने वाला,
छाँव निरन्तर हे॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

जिनधर्म प्रवर्तक!
धर्म तीर्थ नाथ
तीर्थंकर!

जैन धर्म वह कल्पवृक्ष है जो तीनों काल फल देता है। जिसमें तप के पत्ते लगे हुए हैं। सद्गुण के फूल खिले हुए हैं। जो हमेशा मोक्ष रूपी महाफल को देना वाला है। मेरे ऊपर सदा जिनधर्म रूपी वृक्ष की छाँव रहे।
मेरा समाधि मरण आपके दर पर हो।

आचार्य विभव सागर
6-10-2019
निवाई (राज.)

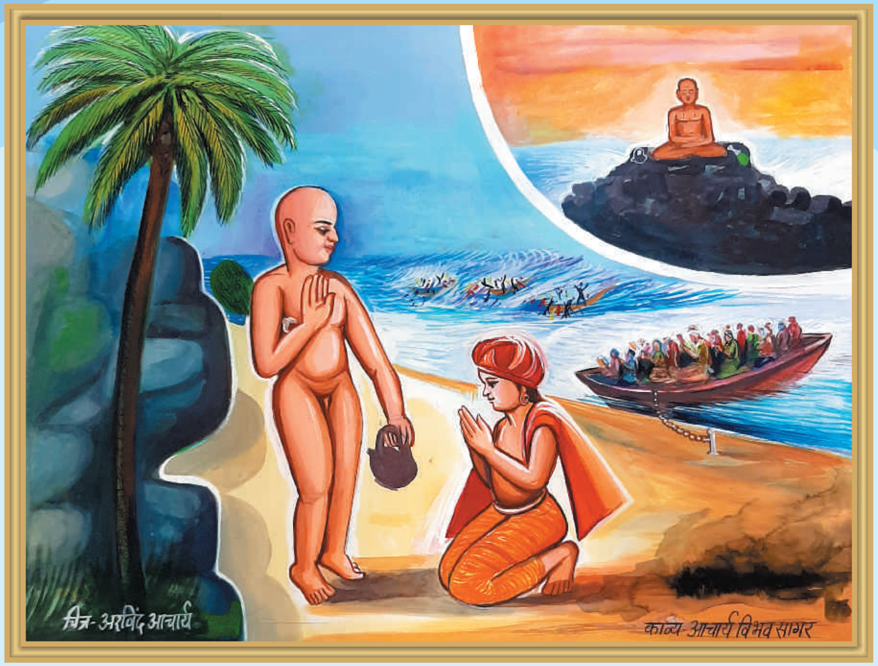

समाधि-भक्ति

भव समुद्र से कौन तरेगा,
किसको तारेगा।
शुभ उपयोगी सन्त तारेगा,
शुभ को तारेगा॥
शुभ उपयोगी बनूँ-बनाऊँ,
भाव शुद्धतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

भो शुद्धोपयोगी
महाश्रमण!
श्री गुरुवर जी!

इस अपार दुःखमय भव समुद्र से कौन पार हो सकता है तथा किसको पार कर सकता है?

शुभ उपयोग रखने वाला सन्त गुरु भक्ति और संयम के प्रभाव से भव सागर से तर सकता है, अन्य जीवों को धर्मजहाज में बिठाकर पार कर सकता है यह धर्मवचन आपके श्री मुख हमें सदा सुनने मिले हैं।

हे भगवन्! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ - मैं शुभउपयोगी बनूँ, बनाऊँ मेरे भाव शुद्धतर हों।

जिन उज्ज्वल भावों से
मेरा समाधि मरण
आपके श्री
चरणों में हों

आचार्य विभवसागर

समाधि - भक्ति

विषय कषायों में जो डूबा,
वह क्या पायेगा।
भवसागर में डूब रहा है,
और डुबायेगा॥
नहीं तारेगा ना तरेगा,
चंचल वा-नर वो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे प्रभो !

जो जीव
विषय कषायों में लीन है।
वह क्या जीवन का सार पायेगा?
कदापि नहीं पायेगा।
वह तो भव सागर में स्वयं
डूब रहा है और अन्यों को
डुबायेगा।
न तो स्वयं तरेगा
न अन्य को तारेगा
वह नर नहीं
वह चंचल वानर
ही समझो।

हे प्रभो !
मेरी चंचलता दूर कीजिए।
आतम के अहितकारी विषय कषाय से
मुझे बचाइए।
मेरा समाधिमरण
आपके चरण में हो।
आशीष दो

आचार्य विभव सागर
8.10.2019, निवाई

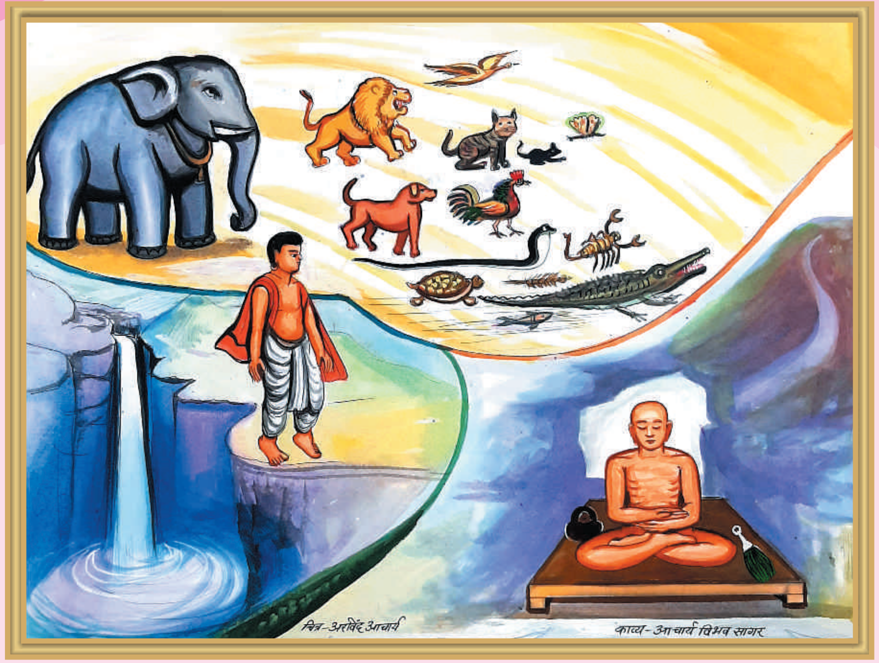

समाधि - भक्ति

द्रव्य न बदला गुण न बदले,
पर्यायें बदलीं।
एक आत्मा चतुर्गति में,
नाना रूप ढली॥
द्रव्य द्रव्यता नहिं तज सकता,
यह निश्चय कहलो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

स्वपर भेद-विज्ञानी।
श्री गुरुवर जी।

आज मुझे आपके द्वारा
पढ़ाया गया, सुनाया गया, सिखाया गया
आत्मकल्याण का पाठ याद आ रहा है।
आपने सिखाया था-

"आत्म द्रव्य जो है, सो है"
गुण जो हैं, सो हैं
जितने हैं सो उतने हैं
आत्म द्रव्य नित्य, अवस्थित
अरूपी है।
गुणों में होने वाले परिणमन
को पर्याय कहते हैं
पर्याय बदलती हैं।
एक ही आत्मा चतुर्गति में
नाना प्रकार की पर्यायें
धारण करती
"कर्मों की गति विचित्र है"
आत्म द्रव्य शाश्वत है
यह श्रद्धा रखूँ
मेरा समाधि मरण
आपके चरणों में हो।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

समाधि भक्ति

गुणीजनों के गुण को लखकर,
मन आकर्षित हो।
उत्तम नर उत्तम पात्रों को,
देखे हर्षित हो॥
पूज्य पुरुष की विनय करूँ नित,
बनूँ विनयधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

मैं आपके श्री चरणों में
समाधि मरण सिद्ध करना चाहता हूँ।
इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए मैंने
आपसे सुना है- "विनयवान शिष्य ही
समाधि लाभ पाता है" अतएव आप
मुझे आशीर्वाद दीजिए - रत्नत्रय धारी
मुनि गुणीजीवों के मुझे सद्गुण ही दिखे।
मैं उनके सद्गुणों को देखकर गुण पाने
आकर्षित रहूँ। उत्तम पात्र संयमी मुनिगण
को देखकर मेरा मन हर्षित हो। मैं हमेशा
पूज्य पुरुषों की विनय करूँ और
विनयधर बनूँ।
मेरा
समाधि मरण
आपके श्री चरणों हो।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

समाधि - भक्ति

जिसने जैसा लक्ष्य बनाया,
वैसा फल पाया।
कल्पवृक्ष तो फल दाता है,
क्यों ना दे छाया॥
शान्ति सिन्धु सा मरण समाधि,
कुन्थलगिरि पर हो,
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभवसागर

हे कुलभूषण!
देशभूषण जिन!
नमन - नमन

हे जिन कल्पद्रुम! जिस
भव्य जीव ने आपकी भक्ति कर
जो लक्ष्य बनाया उसने आपकी
जिन भक्ति से वह फल पाया।
सुना है आचार्य शान्ति सागर जी
दक्षिण ने आपके श्री चरणों
समाधि मरण का लक्ष्य बनाया था
उन्हें आपके श्री चरणों इस ही
कुन्थलगिरि सिद्धभूमि पर
समाधि मरण का
लाभ हुआ।
हे नाथ!
आप कल्पवृक्ष सम फल दाता हो
तो फिर छाया क्यों न दोगे?
हे भगवन्!
मैं प्रार्थना करता हूँ शान्ति
सागर आचार्य सा श्रेष्ठ
समाधि मरण हमारा भी
कुन्थलगिरि पर
आपके द्वार हो।

आ. विभवसागर

समाधि-भक्ति

मेरे पुण्योदय से गुरुवर!
आप यहाँ आये।
पुण्य क्षेत्र में पुण्य पुरुष के,
शुभ दर्शन पाये॥
अन्य क्षेत्र में किया पाप सब,
यहाँ विनश्वर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभवसागर

ॐ

श्री गुरुवर!
नमोस्तु

मेरे प्रबल पुण्योदय से ही
श्री गुरुवर जी! आप मेरे यहाँ पधारे हैं।
पवित्र क्षेत्र में पुण्यात्मा के पुण्य दर्शन
हमने यहाँ पाये हैं।
हे परम पुण्य पुरुष परमेष्ठिन्!
मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ
पूर्व संचित, अन्य क्षेत्र में किया
समस्त पाप आज यहाँ आपके
शुभ दर्शन के सातिशय प्रभाव से
पूर्ण निर्जरा को
प्राप्त हो।
मेरा समाधिमरण आपके श्री
चरणों में हो।

आचार्य विभव सागर

समाधि-भक्ति

जहाँ पंचकल्याणक होवे,
वहाँ चला आऊँ।
तीर्थंकर के जन्मोत्सव पर,
न्हवन करा आऊँ॥
दीक्षा लख दीक्षा को धारूँ,
यम-संयम धर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे संयम प्राण प्रदाता!
चरण स्पर्श

मैं आत्म भावना करता हूँ।
जहाँ पंचकल्याणक होवे मैं वहाँ चला आऊँ। एवं तीर्थंकर के जन्मोत्सव पर न्हवन अनुमोदन दृष्टि अभिषेक करा आऊँ। तथा दीक्षा लख दीक्षा को धारण करूँ। यम संयम धर बनूँ।

मेरा समाधिमरण
आपके श्री-चरणों में
हो।

आचार्य विभव सागर

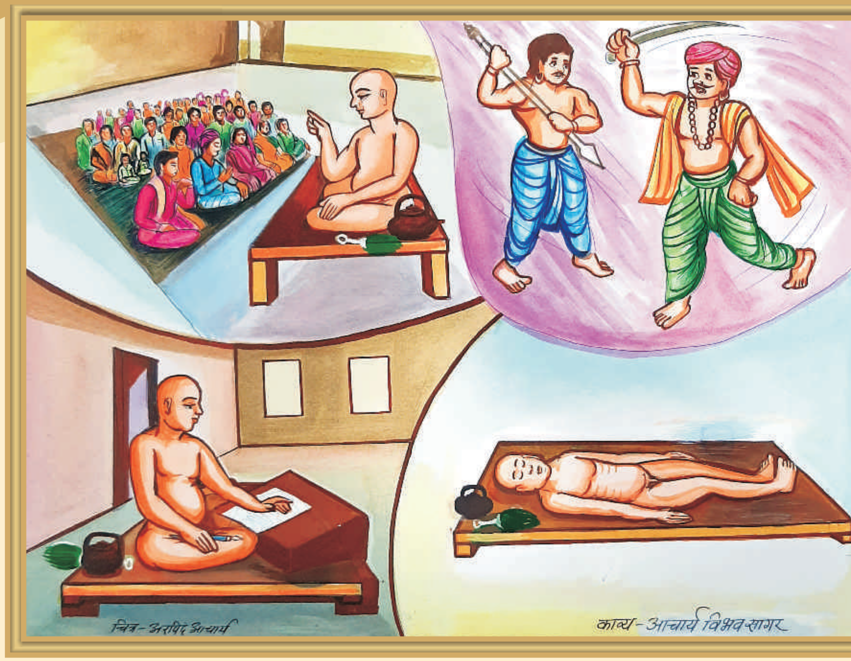

समाधि-भक्ति

ज्ञानी अपने ज्ञान भाव से,
ज्ञान भाव रचता।
अज्ञानी अज्ञान भाव से,
अज्ञ भाव रचता॥
भाव रचयिता तू है ज्ञानी!
रचना सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ॰ विभव सागर

अध्यात्ममूर्ति !
अनुयोगाचार्य।
श्री गुरुवर जी।

आपने समयसार का
स्वाध्याय कराते समय यह भी सिखाया
था कि -
ज्ञानी अपने ज्ञान भाव से ज्ञान
भाव ही रचता है किन्तु अज्ञानी अपने
ही अज्ञान भाव कर्मभाव राग द्वेष को
रचता है।
हे शिष्य विभव! तू ज्ञानी है।
आप अपने भाव के रचयिता हो अतः
शुभ और शुद्धि भाव का रचनाकर
जो आत्महितकर और
जगत को सुखकर हो।
हे वरदाता!
मेरे आत्मप्रदेशों पर
प्रतिष्ठित होकर पवित्र भावों को
रचिए आप श्रेष्ठ रचयिता हो।
ताकि मेरा समाधि मरण
आपके चरणों में हो।
शुभाशीष दो.

आ. विभव सागर

समाधि - भक्ति

बिना खिलाये कैसे खाऊँ,
खाया न जाये।
दाता श्रावक करे प्रतीक्षा,
कब सुपात्र आये॥
पात्र दान कर हर्ष मनाऊँ,
ज्यों नवनिधि कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे धरती के देवता!
भूतल के भगवान!

हे निरवद्य योगी!
हे दिगम्बर तपोधन!

आपके हमारे घर पधारने से
हमारा श्रावक धर्म पलता है। आपको
आहार दान दिए बिना मैं आहार कैसे
करूं? क्योंकि आपने ही तो सिखाया
है - "अपने घर में अमृत भी क्यों न
हो अतिथि को खिलाकर ही खाना
चाहिए"
आपने यह भी समझाया-
"वह महल नहीं पक्षियों का घोंसला है
जिसमें मुनिराज का आगमन
पड़गाहन, आहारदान नहीं
हुआ।"
अतएव आप प्रदत्त शिक्षाओं को
साकार करने के लिए हम दाता श्रावक
आपकी द्वार पर प्रतीक्षा करते
हैं! "पधारो म्हारो आँगन"
आंगनियां में आओ जी,
आकर दर्श दिखाव जी।
मैं कब सुपात्र को दान देकर
ऐसा हर्ष मनाऊँ, ज्यों नवनिधियाँ मिल
गयीं। मुझे समाधि लाभ हो।

आ॰ विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

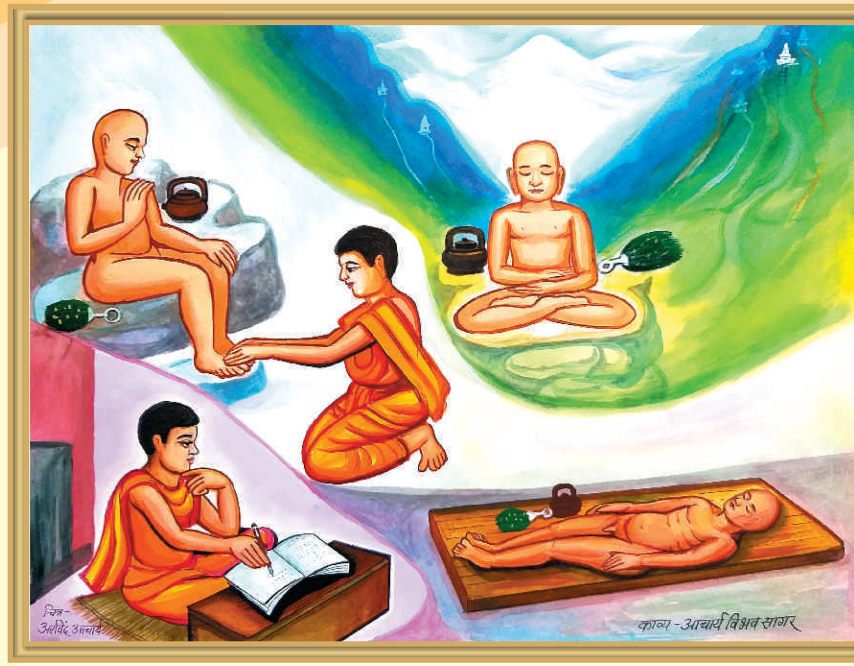

समाधि-भक्ति

मैंने चरण छुए दो तेरे,
तुमने हृदय छुआ।
मेरे आत्म प्रदेशों पर तब,
अद्भुत असर हुआ॥
तेरे गुण मुझमें प्रकटे ज्यों,
सर इन्दीवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ॰ विभव सागर

हे गोम्मटेश्वर!
बाहुबली भगवान!
जय हो

मैंने गोम्मटेश्वर आपके
युगल चरणों के अन्तराल में बैठकरके
आपकी आराधना करते हुए आपके
युगल-चरण अपने युगल हस्तकमलों
से छुए। मैंने जब चरण छुए तब मेरे
लिए ऐसा अनुभव हुआ मानो
आपने हृदय मेरा छू लिया हो।

हे नाथ!
मेरे आत्म प्रदेशों में अद्भुत
प्रभाव हुआ कि आपके गुण
मुझमें वैसे ही प्रकट हो रहे
जैसे सरोवर में सूर्योदय से
कमल खिलते हैं।

हे भगवन्! मेरा समाधि-
मरण आपके चरणों में
हो।

आ॰ विभव सागर

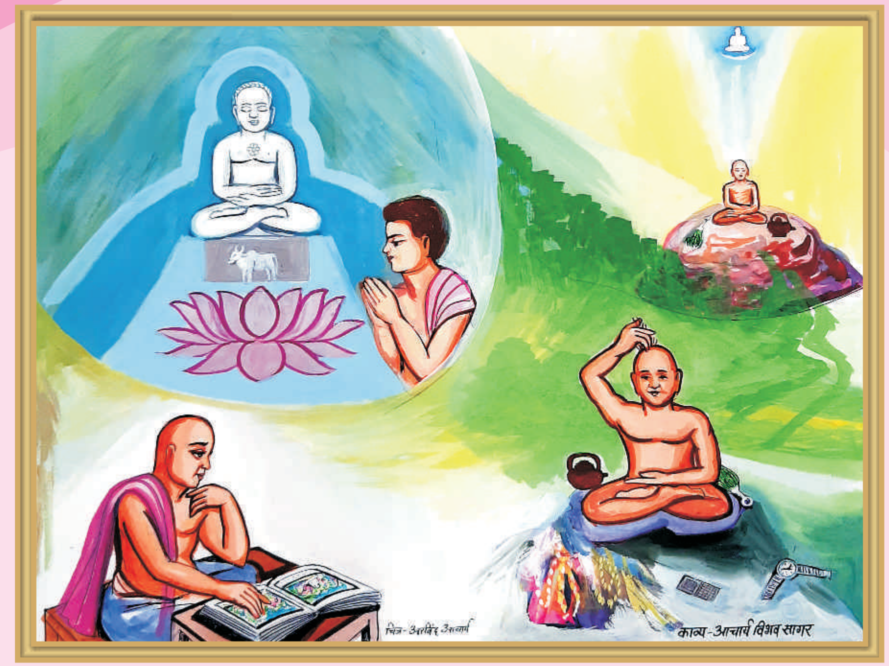

समाधि-भक्ति

अक्षय श्रद्धा अक्षय विद्या,
अक्षय संयम दो।
दो अक्षय वैराग्य जिनेश्वर दो,
अक्षय शम-दम दो॥
हृदय कमल पर सदा विराजें,
गुरु पद पुष्कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ॰ विभव सागर

हे भद्रबाहु स्वामिन्!
समाधि लाभ दो

हे अंतिम श्रुतकेवली
श्री भद्रबाहु मैं चन्द्रगिरि पर्वत पर
आज आपके दर्शन करता हुआ आपसे
प्रार्थना करता हूँ आप मुझे
अक्षय श्रद्धा (क्षायिक सम्यग्दर्शन)
अक्षय विद्या (अनन्त ज्ञान)
अक्षय संयम क्षायिक संयम (चारित्र)
अक्षय वैराग्य दो
अक्षय शम हो
अक्षय दम हो
हे गुरु! मेरे हृदय कमल पर सदा
आपके चरण कमल
सदा विराजमान
रहें।

आचार्य विभव सागर

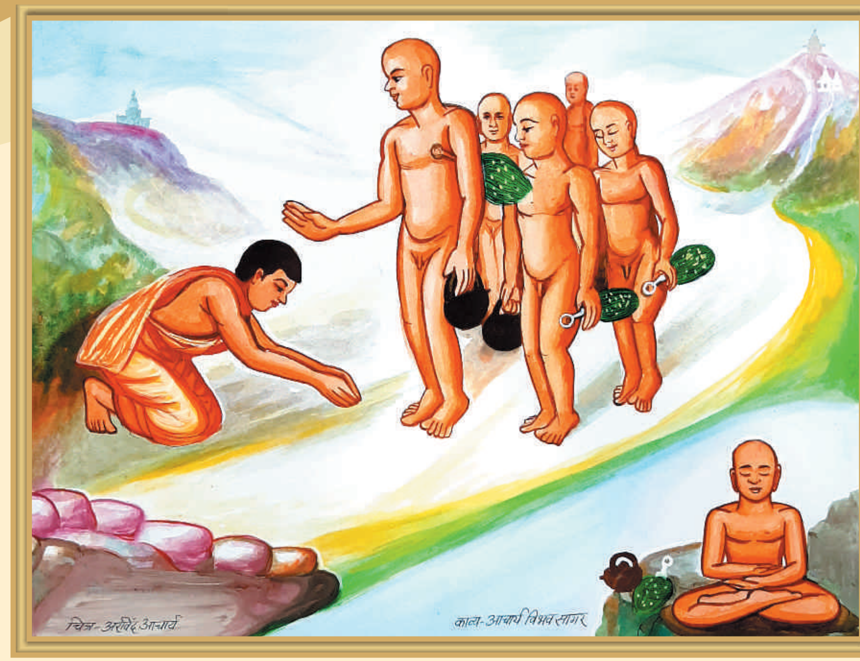

समाधि- भक्ति

ना जाने किस भव में मैंने,
कैसा पुण्य किया।
उसी पुण्य के फल भगवन्!
दर्शन यहाँ हुआ॥
इस दर्शन का फल भी जिनवर,
शाश्वत सुन्दर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे भगवन् !
नमोस्तु

मैं अपने सौभाग्य की सराहना कर धन्य हो रहा हूँ - हे प्रभु ! न जाने किस भव में मैंने कैसा सातिशय पुण्य संचित किया था। जिस प्रबल पुण्योदय के फल स्वरूप हे जिन भगवान ! आपका शुभ दर्शन मुझे आज यहाँ हुआ। हे मेरे भगवन् ! इस दर्शन का फल शाश्वत समीचीन निर्वाण हो उसकी सिद्धि हेतु मेरा समाधि मरण आपके श्री चरणों में हो।

मेरी प्रार्थना
स्वीकारो मेरे नाथ !

आ. विभव सागर

समाधि - भक्ति

पहले सपनों में देखा था,
अब सच में देखा ।
सपने भी सच होते भगवन् !
अनुभव कर लेखा ॥
ज्यों माता के सपने आये,
प्रभु ! तीर्थंकर हो ॥
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो ॥

आ. विभव सागर

श्री नान्दगिरि दि. जैन तीर्थ
कल्याणगढ़, सतारा
महा. भारत
सादर वंदना

हे पार्श्वनाथ भगवन् ! पहले मैंने आपको और इस पावन तीर्थ को स्वप्न में देखा था। आज उसे ही मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ...। स्वप्न भी सच होते हैं यह भी अनुभव कर रहा हूँ।

ज्यों जिनमाता के स्वप्न सफल हुए, प्रभु अवतरित हुए, उसी तरह आज मैं भी अपने सौभाग्य की सराहना करता हूँ। मेरा समाधि मरण आपके श्री क्षेत्र में हो।

प्रिय पाठको! मेरे जीवन का पवित्रतम संस्मरण प्रकट कर आनंद विभोर हो रहा हूँ :- "मैं दक्षिण भारत की तीर्थ यात्रा महामस्तकाभिषेक दर्शन कर लौटते क्रम में इचलकरंजी (महा.) आया। ग्रीष्म वाचना की। चिन्ता मग्न था संघ का विहार किस दिशा में ताकि यात्रा अभूतपूर्व एवं सुखद हो। उस रात मैंने जो स्वप्न देखा, वह फलित हुआ नान्दगिरि तीर्थ दर्शन के रूप में।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

समाधि - भक्ति

यथा बीज में वृक्ष समाया,
तिल में तेल अरे।
और दूध में घृत रस जैसे,
ईन्धन आग धरे॥
पाहन में प्रतिमा के जैसी,
अभिव्यक्ति कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

नँ

हे परम पिता!
परमात्मा!

जैसे बीज में वृक्ष
तिल में तेल
दूध में घी
ईन्धन में आग
पाहन में प्रतिमा
की अभिव्यक्ति होती है।
वैसे ही मेरी आत्मा में
परमात्मा की
अभिव्यक्ति कर दो।
मेरा समाधिमरण
आपके सान्निध्य
में हो।

आचार्य विभवसागर

समाधि-भक्ति

भोग रहित हूँ रोग रहित हूँ,
शोक रहित स्वामी!
योग और संयोग रहित, उप-
-योग सहित स्वामी॥
मैं चिद्रूपी अरस अरूपी,
शुद्ध चिदम्बर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे निर्मल सिद्ध परमात्मा!
सिद्ध भक्ति
करता हूं।
मैं कौन हूँ प्रभो!

हे प्रभो! शुद्ध नय की दृष्टि से
मैं भोग रहित हूँ
रोग रहित हूँ
शोक रहित हूँ
योग और संयोग रहित हूँ।
ज्ञान, और उपयोग सहित हूं।
मैं चैतन्य चिद् चमत्कार
चिद्रूपी, अरस, अरूपी
शुद्ध चिदम्बर हूँ।
हे प्रभु!
मैं शुद्ध स्वरूप हूं।
अशुद्ध नय से यदि
मरण धर्मा हूं तो भी
मेरा मरण आपके
द्वार हो

आ. विभव सागर

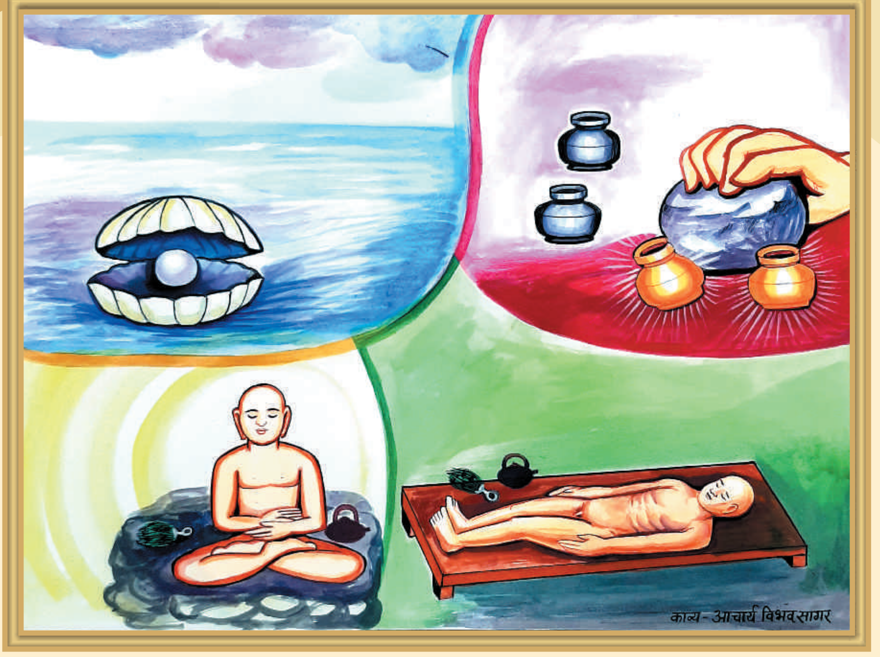

समाधि - भक्ति

जैसे जल में जल मिल जाता,
कुल में कुल मिलता।
वैसे ही निश्छल भावों से,
सन्त - सन्त मिलता॥
वात्सल्य की गंगा यमुना,
बहे शुभंकर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे परमात्मा!
मैं आपसे प्रार्थना
करता हूँ।

जिस प्रकार जल में जल और
कुल में कुल मिल जाता है। जिस
प्रकार निश्छल भावों सज्जन-सज्जन
से मिल जाता है।
वैसे ही धर्मीजन परस्पर में
मिलते रहें ताकि वात्सल्य धर्म की
पुण्य गंगा यमुना इस धरती के
पवित्रात्माओं में
प्रवाहित हो।

आ. विभव सागर
5-10-2019
निवाई

समाधि-भक्ति

हो सकता कुछ योग रहा हो,
या संयोग रहा।
जिनमंदिर में मेरे मन का,
शुभ उपयोग रहा॥
उसी प्रार्थना के बल से तुम,
सम्मुख जिनवर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

श्री जिनवर !
जिन दर्शन दो

अहो पिछले किसी जन्म में मैंने
सातिशय पुण्य संचित किया होगा
जिस पुण्य का सुयोग और संयोग
है पुण्योदय है कि जिनमंदिर में
मेरे मन का शुभ उपयोग लग रहा है।
उन्हीं पूर्व प्रार्थनाओं के बल से हे जिन!
आज आप हमारे प्रत्यक्ष हो।
मुझे आपका प्रत्यक्ष दर्शन
मिल रहा।
मैं प्रार्थना ऐसा ही संयोग बने
मेरा समाधिमरण
आपके दर पर हो।

आ. विभव सागर

तेरी छत्रच्छाया

समाधि - भक्ति

मन अंधा है मन गूँगा है,
ये मन बहरा है।
मन चंचल है मन चिकना है,
मन पर कुहरा है॥
मेरे मन में महामंत्र का,
पल - पल सुमरण हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर-पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ आचार्य विभव सागर

हे महामंत्र!
हे महामना!
नमस्कार हो-
अनंत बार
मेरे मन की दशा जानिए
यह मन अंधा है-
क्यों?
हित पथ (मोक्षमार्ग) आत्म कल्याण
का उपाय अब तक नहीं देख पाया।
यह मन गूँगा है।
क्यों?
आत्म कल्याण का उपाय
किसी अन्य को कभी
सुना नहीं पाया।
यह मन बहरा है क्यों?
आत्म कल्याण के मंत्र
गुरु मुख से सुन नहीं पाया।
यह मन चंचल है क्यों?
आत्म ध्यान में स्थिर नहीं होता।
यह मन चिकना है क्यों? मन को
पकड़ने की, स्थिर करने की कोशिश
करते पर मन सरक जाता है।
मन पर कुहरा होने से आगे कुछ नहीं दिखता।
मैं प्रार्थना करता हूं मेरे मन में महामंत्र का
प्रतिपल स्मरण हो। समाधिमरण हो।

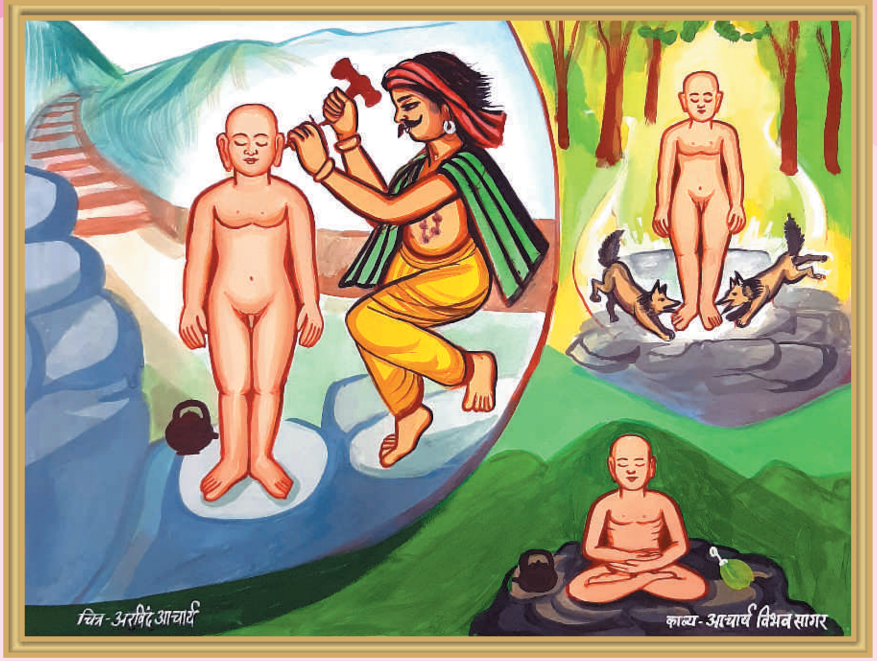

समाधि - भक्ति

गजकुमार सुकुमाल यशोधर,
मुनि आदर्श रहें।
लाखों बाधायें भी आयें,
हँसकर उन्हें सहे॥
हे उपसर्ग विजेता गुरुवर,
परिषह जय कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे उपसर्ग विजेता गुरुवर!
पदरज - वंदन

मैं
आपके श्री-चरणों में
आत्मलाभ
चाहता हूँ।
मैं चाहता हूँ -
उपसर्ग जेता महामुनि- गजकुमार
परिषह जेता महाश्रमण सुकुमाल
समताधारी महा मुनि यशोधरादि
हमारे चिंतन पथ के
आदर्श रहें ताकि
लाखों बाधायें भी आयें तो भी
हम हँसते - हँसते सह जायें
हे उपसर्ग जेता यह समता शक्ति
उपसर्ग और परिषह जय की
शक्ति प्रदान करो।

आचार्य विभव सागर

समाधि - भक्ति

कितना खोजूँ कैसे खोजूँ,
कहाँ - कहाँ खोजूँ।
आप बताओ सही ठिकाना,
वहाँ - वहाँ खोजूँ॥
अपने अंदर सदा विराजा,
अपना ईश्वर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे रहस्य विद्या प्रदाता!
अध्यात्म विद्यापति
दीक्षा मंत्र गुरु!
श्री विराग
पदवंदन

जिज्ञासा के समाधानदाता
आप ही बताओ-
मैं ईश्वर को
कितना खोजूँ?
कैसे खोजूँ?
कहाँ-खोजूँ?

समाधान-
" हे शिष्य!
अपना ईश्वर
सदा अपने ही भीतर
विराजमान है।"
ध्यान कला से
अपने आत्मा में
अपना परमात्मा खोजूँ!
जब खोजो, तब पाओ।
जहाँ खोजो, वहाँ पाओ॥

आचार्य विभव सागर

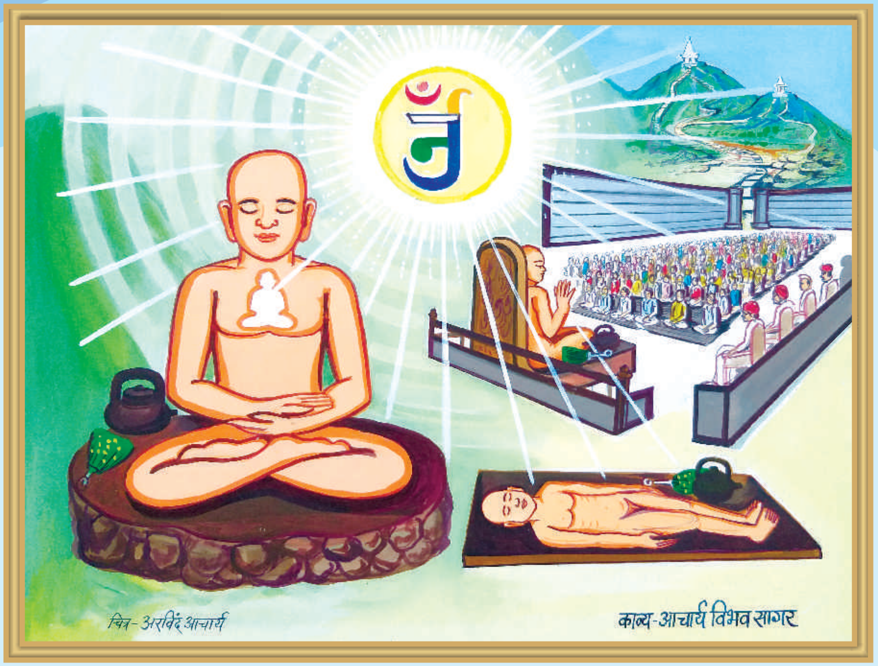

समाधि-भक्ति

यही ज्ञान हो यही ध्यान हो,
ये भाव रहे।
श्वास-श्वास में निज आतम का,
अनुसंधान रहे॥
महामंत्र की गाथा गूँजें,
समयसार स्वर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे परमोपकारी श्री जिन!
उपकारी गुरु!
सम्यग्ज्ञान प्रदाता

यही ज्ञान हो
यही ध्यान हो
यही भान हो
जिससे श्वास-श्वास में
निजात्मा का अनुसंधान रहे।
तथा
महामंत्र णमोकार की गाथायें
मेरी कानों में गूँजें।
कण्ठ में
समयसार का स्वर हो।
मेरा
समाधिमरण
आपके सान्निध्य में हो।

आचार्य विभव सागर

7.10.2019, निवाई

समाधि- भक्ति

चित्त शुद्धि ही श्रेष्ठ शुद्धि है,
सभी शुद्धियों में।
धर्म बुद्धि ही श्रेष्ठ बुद्धि है,
सभी बुद्धियों में॥
चित्त शुद्धि हो धर्म बुद्धि हो,
दूर मोह ज्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे परम पूज्य आचार्य देवता!
भक्ति पूर्वक नमन
ॐ
मन शुद्धि ही
सभी शुद्धियों में
सर्वश्रेष्ठ शुद्धि है।

धर्म बुद्धि ही
सभी बुद्धियों में
सर्वश्रेष्ठ बुद्धि है।

हे भगवन्! मैं आपके
श्री चरणों में प्रार्थना
करता हूँ - मेरी सदा
मन शुद्धि शुद्धि हो
धर्म बुद्धि हो, ताकि
मेरा मोह ज्वर
शांत हो जाये।
मेरा समाधिमरण
आपके द्वार हो।

आचार्य विभव सागर
निवाई - 27. 7. 2019

समाधि: भक्ति

ज्यों प्यासे को जल मिल जाये,
पंथी को छाया।
भूखे को भोजन मिल जाये,
निर्धन को माया॥
जैन धर्म त्यों मिला मुझे है,
दुखहर सुखकर जो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

हे जिनधर्म देवता!
भक्ति भाव
नमन

ज्यों प्यासे को पानी मिल जाये
ग्रीष्मकाल में संतप्त पथिक को छाया मिल
जाये। निर्धन पुरुष धन सम्पदा मिलजाये
तो उसे आनंद होता है।
उसी प्रकार सर्व दुख हर,
सदा सुखकर महादुर्लभ
जैन धर्म मुझे मिला।
मैं अपना
अहोभाग्य मानकर
जिनधर्म की
आराधना करता हूं।
मेरा समाधि मरण आपके श्री
चरणों में हो।

आचार्य विभव सागर
23-10-2019
निवाई राज.

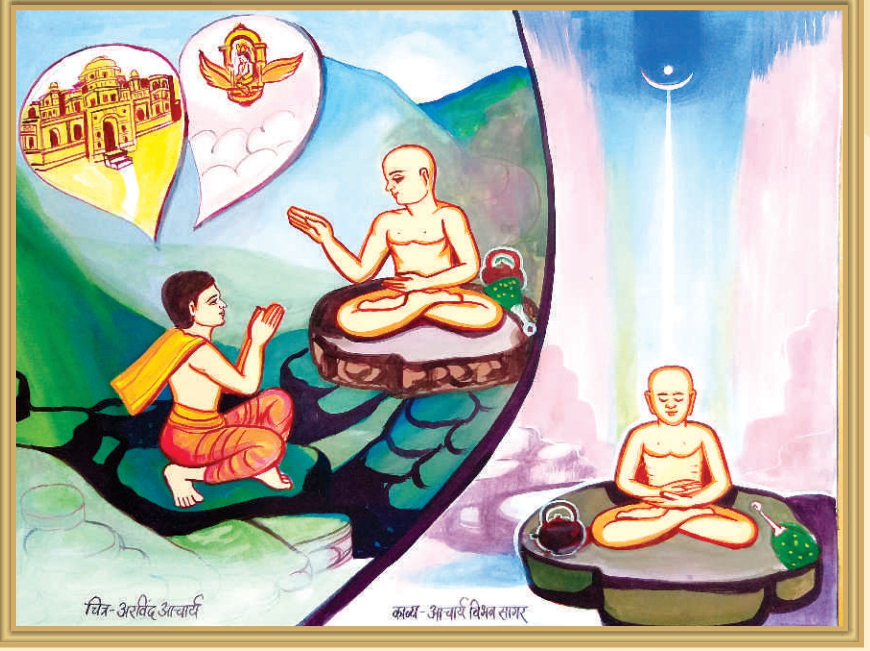

समाधि - भक्ति

मोक्षमार्ग तुमने दरशाया,
तुम हितकारी हो।
संयम पथ में साथ निभाया,
तुम उपकारी हो॥
नहीं स्वर्णपुर, नहीं अमरपुर,
ना अन्तः पुर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

श्री गुरुवर जी!
विराग! पद वंदन

हे गुरुवर! आपने हमें मोक्षमार्ग दरशाया आप हमारे हितकारी हो। आपने हमारा संयम पथ में साथ निभाया अतः तुम ही हमारे सच्चे उपकारी हो।

मेरी आपसे विनय है मुझे आप स्वर्णपुर, अमरपुर (स्वर्ग) और अन्तःपुर न दो मात्र मुझे अपने चरणों समाधि मरण दो। मेरी समाधि आपके द्वार हो।

□

आचार्य विभव सागर
निवाई - 8-10-2019

समाधि-भक्ति

माता से जो नहीं सुना है,
और पिता से ना।
भाई से जो नहीं सुना है,
और मित्र से ना॥
उस अपूर्व जिन वचनामृत का,
दान दया कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो।

आ. विभव सागर

नँ

हे दयालु गुरुदेव!

जो

मैंने अपनी माता से जो नहीं सुना

जो

मैंने अपने पिता से कभी नहीं सुना

जो

मैंने अपने भाई से कभी नहीं सुना

जो

मैंने अपने मित्र से कभी नहीं सुना

उस

अपूर्व जिनवचनामृत का दान

दया कर मुझे दीजिए।

मेरा

समाधि मरण आपके दर पर हो।

व

आचार्य विभव सागर

निवाई 8.10.2019

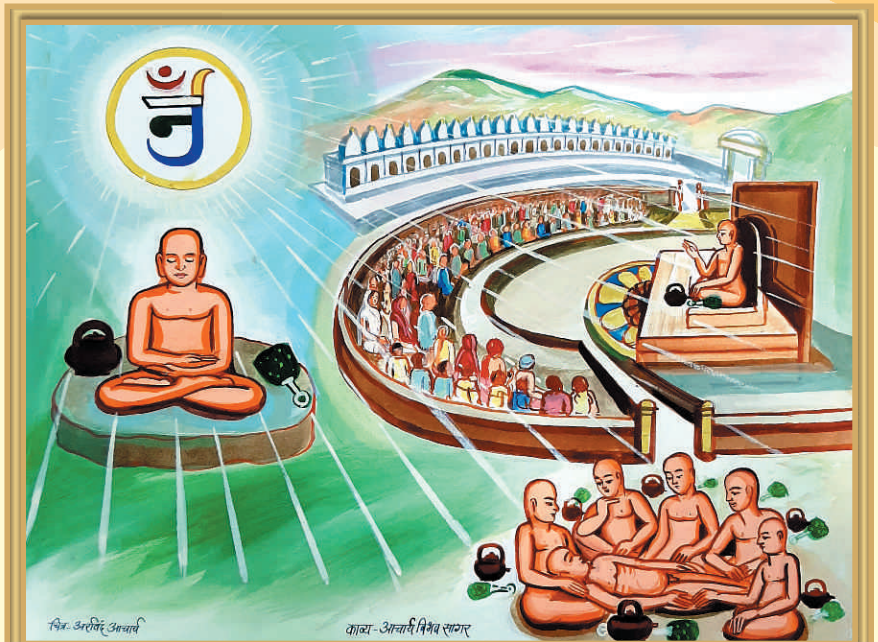

समाधि - भक्ति

अर्हन्तों का धर्म मिला है,
श्री जिन की वाणी।
निर्ग्रन्थों से मिला है शिक्षा,
दीक्षा कल्याणी॥
मेरा महाभाग्य ही आया,
हुआ दिगम्बर हे।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हे॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे भगवन्!
मैं धन्य भाग्य हूँ -
जो मुझे अरिहंत भाषित
श्री जिनधर्म मिला।
श्री जिनवाणी मिली।
निर्ग्रन्थों से
आत्मकल्याणकारी
जिनागम शिक्षा मिली।
आचार्य परमेष्ठि से
दीक्षा मिली।
यह तो मेरा
महाभाग्य ही
उदय में आया।
मैं दिगम्बर मुनि
हुआ।
मेरा समाधिमरण
आपके चरण सान्निध्य में हो।

□

आचार्य विभव सागर
निवाई - 8.10.2019

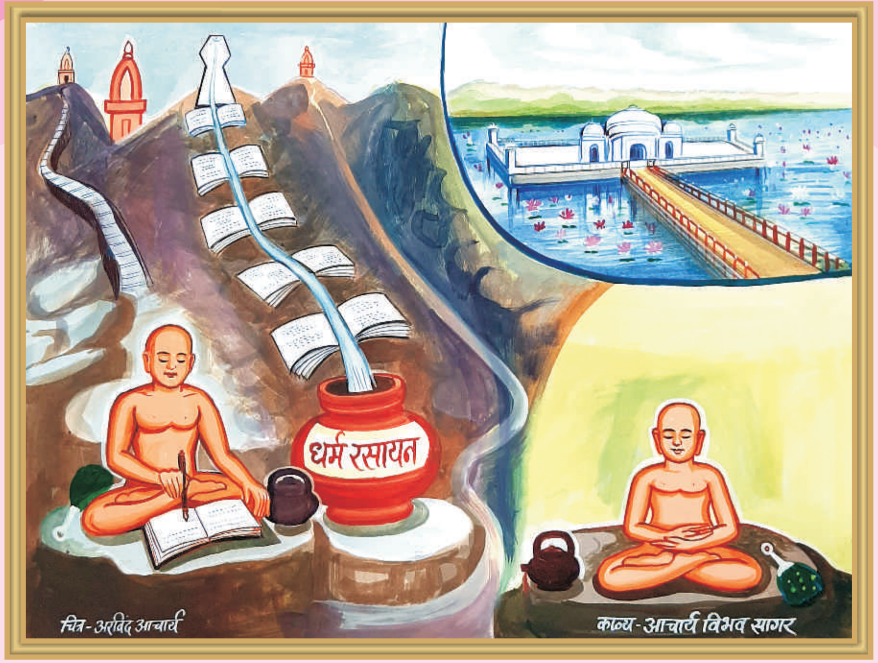

समाधि-भक्ति

धर्म रसायन पी-पीकर के,
अब मैं स्वस्थ हुआ।
सर्व परिग्रह भार त्याग के,
मैं ध्यानस्थ हुआ॥
महावीर भगवान आप सा,
पावापुर सर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे महावीर भगवन्!
जय हो . . .

हे शासन पति!
हे तीर्थंकर!
आपकी दिव्य ध्वनि में निःसृत
धर्म रसायन को मैं कर्णांजुलि से
पी-पीकर के अब मैं स्वस्थ हुआ हूँ।
हे निस्परिग्रह देव!
सर्व परिग्रह का भार त्याग कर मैं
अब ध्यानस्थ हुआ हूँ।
हे भगवान महावीर!
आपकी निर्वाण धरा
पावापुर सरोवर हो
जहाँ हमारा
आपका ध्यान करते
समाधिमरण हो

आचार्य विभव सागर

समाधि - भक्ति

ज्यों पोली लकड़ी के भीतर,
कोई कीट रहे।
उस लकड़ी के ओर छोर में,
इकदम आग लगे॥
उसी कीट सा दुखी जीव हूँ,
सद्गुरु जलधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आ. विभव सागर

ॐ

हे वीतराग देव!
हे निर्ग्रन्थ गुरु!
हे करुणामूर्ति!
हे दयानिधे!
मेरे पर ध्यान दो

मेरी अवस्था ठीक वैसी है
जैसी अवस्था पोली लकड़ी के भीतर
प्रविष्ट कीट के होते ही उस लकड़ी
के ओर-छोर में एक दम आग लगने
पर उस कीट की होती है। उस कष्ट-
मय अवस्था से उस कीट को मृत्यु और
दुख से कौन बचा सकता?
आप पाठकगण! सोचते होंगे
कोई नहीं बचा सकता
प्रिय पाठको! याद रखो-
संसार के सब दरवाजे बंद होने पर भी
धर्म अपना दरवाजा
खुला रखता है।
यदि उस कीट की पुण्यायु शेष है तब
उसी क्षण बादल बरसते ही
उस कीट की रक्षा होती है।
तब हे भगवन्! आप ही जलधर हो
जीवन दाता सद्धर्मामृत के बादल
बरषा कर मेरी रक्षा करो।

आचार्य विभव सागर

समाधि - भक्ति

ज्यों चलती हुई नौका ऊपर,
कोई नर बैठा।
अपने को थिर मान रहा,
अरु मद में ऐंठा॥
भ्रान्तिमान उस नर के जैसा,
मद विकार ना हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि,
तेरे दर पर हो॥

आचार्य विभव सागर

ॐ

हे शान्तिनाथ भगवन्!
मेरी भ्रान्ति दूर करो।

ज्यों जल में चलती हुई
नौका ऊपर बैठा हुआ कोई मनुष्य
अपने आपको स्थिर माने तो यह
उसका भ्रम मात्र है। अहंकार करे
तो वह उसका विकार मात्र है।

हे मेरे प्रभो! मेरे जीवन में
ऐसे भ्रम कभी न हों। ऐसे अहंकार
रूपी विकार कभी न जागें।

भ्रम और विकार से
दूर रखो मुझे।

आचार्य विभव सागर

परम पूज्यनीय श्रमणी आर्यिका 105 अर्हंश्री माताजी

- पूर्व नाम – बा.ब्र. प्रगति दीदी (रीना दीदी)
- माता का नाम – श्रीमती ममता जैन
- पिता का नाम – श्री शिखरचन्द्र जैन
- जन्म स्थान – बकस्वाहा, जिला–छतरपुर (म.प्र.)
- जन्मतिथि – 1 जुलाई 1991
- लौकिक शिक्षा – 10 वीं उत्तीर्ण
- धार्मिक शिक्षा – समयसार, अध्यात्म, न्याय आगम
- भाषा – हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत,अंग्रेजी
- मोक्षमार्ग यात्रा – संघ प्रवेश–अक्षय तृतीय 2011 मोराजी, सागर
- ब्रह्मचर्य व्रत – आजीवन 10 फरवरी 2011 हटा (दमोह)
- दो प्रतिमा धारण – अतिशय क्षेत्र पटेरियाजी, नवम्बर 2011
- तृतीय प्रतिमा धारण – अक्षय तृतीया, अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी
- गुरु – आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज से सभी व्रत
- क्षु. दीक्षा – 14 अक्टूबर, 2013, अशोकनगर (म.प्र.)
- आर्यिका दीक्षा – 14 अप्रैल, 2016 शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी
- दीक्षा गुरु – आचार्य भगवन श्री विभवसागर जी महाराज
- विशेष रुचि – लेखन, मौन, अध्ययन

परम पूज्य
14.4.2016

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

पूर्व नाम	–	पं. अशोक कुमार जी जैन ''शास्त्री''
जन्म स्थान	–	किशनपुरा (सागर)
जन्मतिथि	–	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033, तदनुकूल 23 अक्टूबर, 1976
पिताश्री	–	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जी जैन
माताश्री	–	श्राविका–रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन (समाधिस्थ आर्यिका प्राज्ञाश्री माताजी)
शिक्षा	–	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष
धार्मिक शिक्षा	–	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	–	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.)
वैराग्य	–	9 अक्टूबर, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया
क्षुल्लक दीक्षा	–	28 जनवरी, 1995, मंगलगिरि, सागर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	–	23 फरवरी, 1996, देवेन्द्र नगर जिला–पन्ना (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	–	14 दिसम्बर, 1998, अतिशय क्षेत्र बरासौ, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	–	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	31 मार्च, 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	–	जैन आगमरूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन–जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
रुचि	–	पठन–पाठन, काव्य, सृजन, चिंतन, मनन
कृतियाँ	–	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 75 कृतियों की सर्जना की गई है जो इसी पुस्तक में सूचीबद्ध है।
अलंकरण	–	''सारस्वत–श्रमण'', ''सारस्वत कवि'', ''शास्त्र कवि'' ''नय चक्रवर्ती'', ''संस्कृताचार्य'', विद्यावाचस्पति (डॉक्टर)''

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900